आर्य्यभाषा के दो अपूर्व उपन्यास।

१-पारिवारिक दृश्य मूल्य ।=)

लेखक-श्रीमान् केशवदेव जी शास्त्री।

२-श्रीमती विद्यावतीदेवी मूल्य ॥)

लेखक-महाशय कृपारामजी महिता।

महाशयों! यदि आप स्त्री जाति को उसकी अधोगति से निकालना चाहते हैं।

यदि आप अपनी बहिनों को उनके अधिकारों से खबरदार करना चाहते हैं।

यदि आप अपनी बहनों की गिरी हुई हालत को सुधारना चाहते हैं।

यदि आप अपने घर में पवित्र भावों को संचार करना चाहते हैं।

यदि आप अपने घर में शांति का राज्य लाना चाहते हैं।

यदि आप आने वाली सन्तान के भावों को उच्च बनाना चाहते हैं।

यदि आप स्त्री जाति में से बुरे तवहमात को दूर करना चाहते हैं।

यदि आप बाल-विवाह आदि की हानियों से अपनी सन्तान को सचेत करना चाहते हैं।

यदि आप इस देश में सामाजिक संशोधन के हामी हैं तो उपरोक्त दोनों पुस्तकों को अति शीघ्र मंगाकर स्वयं देखिये, बहिनों तथा माताओं को दिखाइये, बच्चों को पढ़ाइये।

इनके पाठ से ईश्वर पर सच्चा विश्वास, सदाचार, विद्या का व्यसन, प्रेम की उत्कृष्टता, देश भक्ति, परोपकार, प्राण जाने पर भी धर्म न छोड़ना, सामाजिक सुधार और ईश्वर प्राप्ति के उपाय आदि अनेक बातों की शिक्षा मिलेगी।

* ओ३म् *

तर्क इसलाम ।

उपस्थित सभ्यगण ! मैं आप को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि आप कतिपय महाशयों ने तो इस नगर से और कतिपय महानुभावों ने दूर देशस्थ नगरों से इस ग्रीष्म ऋतु के कष्ट को सहन करके इस उत्सव को अपने आगमन से सुशोभित किया है ।

इस सामान्य धन्यवाद के अतिरिक्त मैं साधारणतया आर्य्यसमाज को और विशेषतया गुजरानवाला समाज को बधाई देता हूं और आनन्द हुलास आच्छादित करता हूं, कि वह आज एक श्रेष्ठ और निपट निराले कार्य्य के करने के अर्थ उद्यत है और आसपास के विपक्षी और विप्रलम्भ तथा उल्हनों को किञ्चित ध्यान में न लाकर एक जन्म के मुसलमान (यवन) को अपने साथ मिला रहा है ।

आर्य्यसमाज गुजरानवाला को मैं और भी आनंद व हर्ष के साथ स्मरण करता हूं कि वह इस कार्य में असीम दृढ़ रहा, यद्यपि विपक्षियों की ओर से आर्यसमाज गुजरानवाला के पास बहुधा पत्र आते रहे कि वह " आस्तीन का सांप " है, इस से बचकर रहना कपटी और विश्वासघाती पुरुष है, धोखे में मत आजाना, यह भेद लेने के लिये आया है और मुसलमानों (यवनों) की ओर से है ! परन्तु है प्रशंसनीय उन का साहस कि उन्होंने असम्बद्ध प्रलाप करने वालों का कुछ ध्यान न करके इस कार्य को सर्व प्रकार परिणाम तक पहुँचाने की तत्परता प्रकट की ! हां जहां आर्य समाज के सभासदों को इस प्रकार असन्तुष्ट करने का प्रयत्न

किया गया, वहां मुझे भी बहुधा मुसलमान लोगों ने आर्य्य समाज की ओर से असन्तुष्ट करने में कुछ शेष नहीं छोड़ा। कोई नियोग का विवाद सम्मिलित करने लगा, कोई आवागमन का विषय प्रविष्ट करने लगा और अन्य बातें सुनाने लगा—और जहां तक होसका, अन्य अनर्गल लेखों से मेरे पगों को कँपायमान करना चाहा। परन्तु उन सत्य से बहिर्मुखों को यह पता नहीं था कि जब किसी के हृदय पर सचाई की मोहर अंकित हो जाती है तो वह असंगत प्रलाप और आस पास के लोगों की आयँ बायँ शायँ से मिट नहीं सकी है, न उस को लेख दूर कर सका है, न वाद विवाद, न धमकी, न डर, न तलवार, न कृपाण, न कोई लालसा आदि। सचाई शिर के साथ जाती है। शरीर छेदन किया जा सकता है, किन्तु उस सत्य विश्वास के चिन्ह को हम छेदन नहीं कर सके। अतएव बड़े धन्यवाद का स्थल है कि आज हम निर्विघ्नरूप से यहां पर एकत्र हो कर इस श्रेष्ठरीति (संस्कार) को पूरा कर रहे हैं। जो सचाई केवल (सत्यता) सचाई पर निर्भर है जिस की पैंदी में न कोई लोभ है, न डर न कोई बहकावट मौजूद है न फुसलावट, न तलवार मौजूद है किन्तु सत्यता को ग्रहण कर के और सत्यता पर मोहित होकर मैं आज एक मत को छोड़ कर दूसरे धर्म में सम्मिलित होता हूं। मैंने यवन मत (मुसलमानी मजहब) को क्यों छोड़ा? इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक मनुष्य नहीं दे सकता। सम्भव है कि बहु और मत (धर्म) परिवर्तन की घटना सुन कर वह अपने हृदय में कोई उलटा उत्तर प्राप्त करलें और उलटी रीति पर अपने मन में शान्ति प्राप्त करलें।

किन्तु इनको विश्वास करना चाहिये कि मैंने उन कारणों को लेकर मत परिवर्तन नहीं किया कि जिन कारणों को हम बहुधा अपने आस पास के मत परिवर्तन कर्ताओं को बर्ताव में लाते हुये पाते हैं उदाहरणतया।

(१) बहुत से लोग धन और रुपये के अर्थ मत परिवर्तन कर लेते हैं।

(२) बहुत से जन किसी स्वरूपवती स्त्री के पीछे धर्म छोड़ बैठते हैं और बहुधा दृष्टान्त देखे सुने जाते हैं कि अमुक पुरुष अमुक कंचनी के हेतु अमुक होगया इत्यादि २।

(३) बहुत से पुरुष नौकरी व किसी पद के लालच में आकर मत परिवर्तन करते हैं।

(४) बहुत से जन किसी भय से अथवा धमकी से मत परिवर्तन करते हैं। हां अनेक ने तलवार के भय से धर्म परिवर्तन किया है।

(५) अनेक पुरुष किसी मत और सम्प्रदाय सभा (सुसायटी) का मत केवल इस कारण स्वीकार कर लेते हैं कि सोशल (सभा सम्बन्धी) और पोलेटीकल (राज्यकीय) अधिकार हमें मिल जावेंगे।

(६) बहुत से लोग दूसरे मत में धनी और पढ़े लिखे पुरुषों की एक बहुत बड़ी संख्या देख कर मत परिवर्तन कर लेते हैं।

(७) बहुत से मनुष्य अपनी बिरादरी या मा बाप को धमकाने के लिये किसी अनबन पर मत परिवर्तन कर बैठते हैं।

(८) अनेक जन अपने सहधर्मियों की ओर से कोई चोट खाकर उनको अपने मत परिवर्तन से धमकाने के लिये ही बिना सोचे समझे धर्म परित्याग कर बैठते हैं। और बहुधा धोखे से ही धर्म छोड़ बैठते हैं परन्तु मैंने जो इस्लाम परित्याग किया है वह पूर्वोक्त कारणों में से किसी कारण को ग्रहण करके नहीं किया।

आर्य्यसमाज की ओर से मुझे धन, द्रव्य, स्त्री पद या किसी अन्य अधिकार का लालच नहीं दिया गया, और

यदि सच पूछो तो आर्य्यसमाज के पास इस प्रकार लालच ही कहां है यदि कल्पना करो कि कोई हो भी तो क्या ऋषियों की सन्तान किसी लालच या धोखे से एक पुरुष को अपने साथ मिलाकर यह समझ सक्ती है कि हमने धर्म का काम किया ? किन्तु महान् अधर्म और महान् पाप का काम है तो फिर क्या आर्य्य समाज ने मुझे बहका लिया। प्रथम तो आर्य्यसमाज का काम कतिपय मतों की सदृश बहकाकर संख्या बढ़ाना कदापि नहीं है कदाचित यदि हम यह कल्पना भी करलें कि आर्य्य समाज बहका लेता है तो किसको ? क्या एक यूनीवरिष्टी (विश्व विद्यालय) के डिगरी प्राप्त को, एक हाईस्कूल के हेडमास्टर को, और फिर एक मुसलमान को (ईं ख्याल अस्तो मुहाल अस्तो जुनूं ? —ऐसा विचार करना दुस्तर वरन उन्मत्तता है !

आर्य्य समाज के किसी आदमी ने मुझे नहीं बहकाया, आर्य्यसमाज के किसी आदमी ने मुझे नहीं खींचा, किन्तु उस सत्यता ने मुझे आकर्षित किया जो भविष्य में मेरी समान बहुतों को खींचेगी, वह सत्यता क्या ? वह वैदिक धर्म कि जिसके चिन्ह मैं यहां अपने आस पास कहीं २ द्वार और भीतों पर देख रहा हूं। इस सत्यता के जल ने मेरे पिपासाकुलित हृदय को आर्दित किया जबकि कुरान के मारुस्थली तट मेरी पिपासा की शान्ति न कर सके जब कुरान की बुद्धि विरुद्ध बातें मेरे डमाडोल और क्लेशित मस्तक को कुछ संतोष न दे सकीं ! कुरान के बहुत से जांगल्य और दयारहित प्रकरण मेरे नम्र हृदय को संतुष्ट न कर सके, जब कुरान की निकृष्ट कक्षा की शिक्षा मेरे उच्च कक्षा के विचारों का साथ न दे सकी, जब कुरान के मानने वालों का नैष्ठिक जीवन (अमली जिन्दगी) मुझ पर आरोग्यप्रद और आल्हादिक प्रभाव न डाल सकी, जब मैं इस अंधकार आच्छादित वायु चक्र में इधर उधर हाथ मार कर खेदित

और भ्रमाकुलित हो रहा था तो मुझे अन्दर से निकालने के निमित्त वैदिक शिक्षा के प्रकाशित भुवन भास्कर की रश्मियों ने मेरे पथ को प्रकाशित किया, और मुझे अन्ध कूप से निकालकर प्रकाशमय भूमि में पहुंचाया, मैं अरब के मरुस्थलों से निकल कर गंगा और यमुना के तटों पर आया, जहां वेदोक्त शिक्षा का वह मिष्टाम्बु (शरबत) मिला, जिस ने मेरी हार्दिक पिपासा को शान्त कर दिया। मेरे हृदय और मस्तिष्क को शान्ति प्राप्त हुई।

मुझे पुराने ऋषियों और मुनियों की सन्तान में से कुछ ऐसे चेहरे दिखाई दिये कि जिनके पास जाने से और जिनके समीप वर्षों तक रहने से मुझे विश्वास हो गया कि सच-मुच चारों ओर अरबी मरुस्थली और अरब के मरुस्थलीय तट से शुष्क हुये मेरे हृदय और मस्तिष्क ही नहीं हैं; वरन इस समय भी बहुत से हृदय हैं जो आद्यावधि उष्ण वायु के झोकों से रक्षित हैं और आत्मिक प्रभावों को हवन की सुगन्धि के समान अब भी अपने आस पास इस प्रकार फैला रहे हैं कि जिस प्रकार सहस्रों वर्ष पूर्व गंगा और यमुना के तटों पर बैठे हुए ऋषियों, हिमालय पर्वत की लहलहाती हुई शिखरों पर विराजमान मुनियों, के आत्मविवेक में लवलीन हृदयों से वह आत्मिक वायु बहती थी कि जिसके झोंके सहस्रों वर्ष पश्चात् भी योरूप और अमेरिका के जाग्रत मस्तिष्कों और आत्मविवेक जिज्ञासुओं को आद्यावधि सुगन्धित कर रहे हैं, और भविष्यत् में इस से भी अधिक करेंगे। यह सुगन्धित झोंके कहां से और किसके लिये ? वेदों की शिक्षा से सत्यता पर मोहित और आत्मविवेक के जिज्ञासुओं के लिये। भला क्या सम्भव हो सकता है कि एक ईर्षा रहित हृदय को चमेली के नव विकसित पुष्पों की सुगन्धिका झोंका संतुष्ट करदे और वह फिर भी अपने हाथ से वर्षों से ग्रहण किये हुये एक जर २ चर्म वस्त्र को न गिरावे,

क्या सम्भव हो सकता है कि एक पुरुष को हरित तृण संकुलित भूमि दृष्टि पड़जावे और वह फिर मरुस्थलीय उष्ण वायु के झोंकों से बचने के लिये इस हरित तृण संकुलित भूमि की ओर न भाग आवे ! नहीं कदापि नहीं ! प्रत्येक पुरुष मरुस्थली की अपेक्षा हरित तृण संकुलित भूमि पर अधिक रीझता है । प्रत्येक मनुष्य तिक्त जल की अपेक्षा मिष्ठाम्बु की अधिक आकांक्षा करता है, प्रत्येक पुरुष जीर्ण की अपेक्षा नवीन सुखद का अभिरुचिक है उस दशा में कि वह सत्य विवेक की आंख से ईर्षा की ऐनक (उपनयन) को उतार कर सत्य को सत्य, हरित को हरित और पीत को पीत ही देखने की योग्यता रखता हो ! मैंने ईर्षा के प्राणान्तक रोग से आरोग्यता प्राप्त की । मत द्वेष के काले पर्दे मेरी आंखों के सामने से दूर हुए । ईर्षा की चतुर्दिक भीत से मेरा शिर बाहर निकला, तो क्या देखा कि जिस गढ़े में मैं पड़ा हुआ हूं वह मेंडक के कूप की समान परिमित और संकीर्ण तथा तिमिरमय है ! जब कि इससे बाहर (सत्यता) सचाई का समुद्र अपरिमित और वैदिक प्रकाश से प्रकाशित जीवन नौका को मातृवत गोद से लगाये हुए उस किनारे की ओर ले जारहा है कि जो जीवन का उद्देश्य है । यदि मैं अपने कतिपय सधर्मियों की समान ईर्षा का सेवक और सत्य तथा सचाई से घृणा करने वाला होता तो मैं कदापि इस संकीर्ण और अँधेरे कूप में से न निकल सक्ता और मुझे वह प्रकाश न प्राप्त होता कि जिसको मैं प्रसन्नता पूर्वक वर्त रहा हूं । पर मेरे लिये आवश्यकीय हुआ कि मैं प्रकाश और अँधेरे का निर्णय करूं, और उनमें से श्रेष्ठ को ग्रहण करूं । मैंने सत्यता को दृष्टि में रख कर और ईर्षा से रहित होकर भिन्न २ मतों का (Comparative study) तुलना मय अध्ययन आरम्भ किया । एक ओर कुरान है तो दूसरी ओर बाइबिल एक ओर बुद्ध मत की पुस्तकें हैं तो दूसरी ओर वैदिक लिटरेचर (ग्रन्थ) ।

मैंने कुरान और इस्लाम (यवन मत) को सबसे निकृष्ट कक्षा में पाया। बाइबिल और ईसाई मत को इससे और कई कक्षा ऊपर और श्रेष्ठ पाया। किन्तु बौध-मत को ईसाई मत से उच्च पाया, मैं ईसाई मत को मान स्वीकार कर लेता, यदि ईसाईपन की दो तसलीसें में कितनी ही एक अनर्गल बातों सहित मेरे मार्ग में रोक न बनतीं। अर्थात् प्रथम साधारण तसलीस (अर्थात् पिता, पुत्र तथा पवित्रात्मा तीनों को ईश्वर मानना) द्वितीय विशेष तसलीस तीन मुख्य भारी पाप के कामों की, अर्थात् प्रकृत्यत्व, (माद्दियत) मांस भक्षण और मद्यपान। इससे आगे, कदाचित् मैं बौद्ध मत को स्वीकार करता, यदि मुझे बुद्ध मत से अधिक प्रकाशमान वरन् बुद्ध मत का उद्गमस्थान तथा निकासस्थान वैदिक धर्म न मिल गया होता। निदान मेरे दुःखित हृदय ने मुझे विवश किया कि हर प्रकार का भय और डर त्याग कर प्रत्येक भांति के उलहने और विप्रालंभ दृष्टिवाह्य करके, इस धर्म की पताका के नीचे आजाऊं, इस सभा का सभासद बन जाऊं कि जिसके प्लेटफार्म पर खड़े होने का मैं आज अभिमान करता हूं। मुझे यह मान प्राप्त न होता यदि आर्य्यसमाज जीवित और जागृत, सत्यता पर निर्भर और सत्यता (सचाई) पर मोहित होने वाली सुसाइटी (सभा) होकर सत्यता के नियमों का बिना रोक टोक के प्रचार करने वाली, और किसी प्रकार की विरुद्धता का ध्यान चित्त में लाकर भयभीत न होने वाली सभा न होती। मैं फिर कहता हूं कि आर्य्यसमाज के साहस को धन्यवाद है। वेद की पवित्र शिक्षा ने भारतवर्ष में ऐसी सुसाइटी और ऐसे पुरुष पैदा कर दिये हैं कि जो भले प्रकार जानते हैं कि सचाई [सत्यविवेक] एकही है। आज से पचास वर्ष पूर्व एक जन्म के मुसलमान पुरुष के पगों से कदाचित यह मन्दिर और प्लेटफार्म अपवित्र होगया हुआ समझी जाती। परन्तु आज वह दशा नहीं है। वेद की शिक्षा ने यह सिद्धि कर दिया है जिस प्रकार एक सदाचारी जन्म

का ब्राह्मण वेद मन्त्रों और उनकी सत्यता को सर्व साधारण के सम्मुख प्रकाशित करने का अधिकारी है, वैसे ही एक सदाचारी जन्म का मुसलमान भी उसी मन्दिर में और उसी प्लेटफार्म पर खड़ा होकर वेद के सत्यज्ञान को प्राप्त करके अनेक वेद के जिज्ञासुओं के कानों तक अपनी ध्वनि पहुंचा सक्ता है। निस्संदेह वेद की पवित्र शिक्षा का भास्कर ज्यों २ अपना प्रकाश फैलाता जायगा त्यों २ असभ्यता और अन्धकार दूर होता जायगा! और असंख्य जो पगडंडियों पर पड़े हुए हैं इस प्रकाश के होने से सुख के मार्ग [विस्तीर्ण पथ] को ग्रहण करलेंगे। निदान मैं आज अपनी मुसलमानी पगडंडी को त्याग कर वैदिक धर्म के राज्य पथ [शाहराह] में पग धरता हूं। परन्तु प्रथम इसके कि मैं बैठजाऊं, मैं उचित समझता हूं, कि उपस्थित समुदाय के सम्मुख कुछ कारण कुरान की शिक्षा के विषय में वर्णन करूं कि जिनके कारण मैंने " कुरानी इसलाम " को अपने हृदय और मस्तिष्क के विरुद्ध पाकर त्याग दिया।

मैंने बहुत काल तक कुरान की छान बीन की किन्तु मुझे मोती और मणियों के स्थान में पत्थर और कङ्कड़ ही मिले, मैं कह सक्ता हूं कि आत्मज्ञान का प्यासा जो कुरान की आलस्य झलक के पीछे भागता है वह उष्ण वायु के झोकों से जो अरब के मारुस्थली सदृश अरबी कुरान में चल रहे हैं अपनी आत्मा को हानि पहुंचा लेता है। माना कि वह इससे वे सुधि क्यों न रहे। क्योंकि आत्मज्ञान कुरान से ध्रुव तारे और पृथ्वी के परस्पर की दूरी से कुछ कम नहीं है। यदि मैं कुरान से आत्मज्ञान ढूंढना चाहूं तो, कदाचित मेरा यह काम इन्द्रायन की बेलि से मीठे खर्बूजों और नीम के पेड़ से मीठे आम्रफलों की लालसा रखने से कुछ कम असङ्गत न होगा। मैंने अपने अनुभव से कुरान और आत्मज्ञान को दो विरुद्ध दशाओं में चलते देखा। प्रथम की गति दक्षिण की ओर

द्वितीय की उत्तर की ओर। और वास्तव में जिस शिक्षा को ग्रहण करके महमूद जैसा पुरुष (अमीनुलमिल्लता) मतका पेशवा और औरङ्गजेब जैसा पुरुष मुहीउद्दीन अर्थात् मत जीवक बन गये। वह शिक्षा आत्मज्ञान को, बायें करने से पकड़ कर हृदयरूपी मन्दिर से बाहर निकाल देती है। मैं स्वीकार करता हूँ कि कुरान परमेश्वर को आकाश और पृथ्वी का प्रकाशक बताता है, परन्तु शोक का स्थल है, इस प्रकाश पर जो सहस्रों स्याही के बोरे भर २ कर डाले गये हैं, उन से परमेश्वर का प्रकाशमय चेहरा तब से भी अधिक काला कर दिया गया है। संसार की उत्पत्ति विषय में जो शिक्षा है, उसने बाइबिल की गप्पों को भी मात कर दिया है। कुरान में जो कयामत (प्रलय) का चित्र (नकशा) जमाया गया है। वह निपट निराले ढङ्ग का है। बहिश्त [स्वर्ग] के शराब व कबाब, हूर व गिलमाँ, सोने चांदी के आभूषणों से परमेश्वर प्रत्येक यती और पढ़े लिखे मनुष्य को बचावे, पशुओं की विकलता [बिलबिलाहट] कि जिनके रुधिर से परमेश्वर की प्रसन्नता और स्वर्ग की प्राप्ति समझी जाती है, असभ्यता के इच्छुकों के अतिरिक्त पत्थर को भी कम्पायमान करने वाली है। सृष्टि क्रम विरुद्ध किस्से कहानियों और ढकोसलों ने कुरान को एक साधारण प्रमाणिक पुस्तक की कक्षा से भी नीचे गिरा दिया है।

यवन मत से भिन्न पुरुषों को काफिर [अधर्मी] और मुशरिक * कह कर उनको अपवित्र समझने और उनसे दूर रहने की दीक्षा ने सब से मेल रखने के नियम की जड़ में दीमक लगा दी है। स्त्री को केवल खेती और मिलकीयत (पूंजी) समझने के नियम ने सच्चे स्त्री और पती बनने के

---

* वह पुरुष जो केवल ईश्वर को न मानकर, उसके साथ किसी और को भी सम्मिलित करता है।

स्थान में परस्पर स्वामी और सेवक के सम्बन्ध को भी लज्जित कर दिया है। मैं साहस के साथ कहता हूं कि कुरानी शिक्षा ने कुरानको ईश्वरीय पुस्तक की पदवी से गिरा कर एक सभ्य पुरुषकी साधारण पुस्तक से भी नीचे गिरा दिया है, और कुरान के दुर्ग (किले) को कुरान की ही बारूद ने उड़ा दिया है, आज कल के बहुधा नवीन प्रकाश से युक्त मुसलमान (यवन) मत के रक्षक इस किले को बचाने के निमित्त अपने सर्व बल से प्रयत्न कर रहे हैं और इस पर नवीन खोल चढ़ारहे हैं, परन्तु साइंस (प्राकृत विद्या) के नियमों के सामने जीर्ण दुर्ग (बोदे किले) धड़ाम २ गिर रहे हैं।

उपस्थित सभ्यगण ! कुरानी शिक्षा क्यों समीक्षा (एतराज़) के योग्य है ! इसके निमित्त मैं कुछ बातें आप के सन्मुख प्रविष्ट करता हूं।

प्रथम-परमेश्वर विषय में कुरान की शिक्षा निपट भद्दी और अत्यन्त समीक्षा (एतराज) किये जाने योग्य है परमेश्वर को एक साधारण पुरुष कल्पना करके उस में कुछ अच्छे गुणों के अतिरिक्त विशेषतया ऐसे गुण भी दर्शाये गये हैं जो किसी निच्चकक्षा के पुरुष में पाये जाते हैं, मैं यहां पर उदाहरण की भांति कुछ बातें प्रकट करता हूं।

कुरान की शिक्षा है कि परमेश्वर बड़ा मक्कार और फ़रेबी है देखिये:—

उल्था—मकर किया काफ़िरों से और मकर किया खुदा से, और खुदा बेहतर है—मकर करने वाले में से (सी० ३ अलउमरा आयत ५३) और इसी प्रकार सीपारा ९ सूरत इन्फ़ाल आयत ३० और सीपार ३० सूरत उलतारक आयत १५ व १६ और अन्य बहुत से स्थानों में भी खुदा (परमेश्वर) को मक्कारों का मक्कार और फरेबियों का फरेबी लिखा गया है। कतिपय भाष्यकारों मुफ़-

सिरों) ने जब देखा कि खुदा पर दोषारोपण होता है तो उन्हों ने (मकरअल्लाही) के अर्थ 'खुदा ने इन लोगों की मक्र की खूब सज़ा दी" करदिये परन्तु यह अत्यन्त अशुद्ध है। सज़ा (दण्ड) और जज़ा (पारितोषिक) के अर्थ 'मक्र अल्ला हो' में से कदापि नहीं निकलते। यदि अरबी व्याकरण के नियम से भी देखा जावे तो भी 'मक्र अल्ला ही' के अर्थ सज़ा 'दण्ड' नहीं होसक्ते।

मकर सामान्य भूत है इसके रूप यों होंगे।

	एक वचन	दो वचन	बहु वचन
पुल्लिंग अन्य पुरुष	उस एक आदमी ने फ़रेब किया।	उन दो आदमियों ने फ़रेब किया।	उन बहुत आदमियों ने फ़रेब किया।
स्त्रीलिंग अन्य पुरुष	उस एक स्त्री ने फ़रेब किया।	उन दो स्त्रियों नें फ़रेब किया	उन बहुत स्त्रियों ने फ़रेब किया।
पुल्लिंग मध्य पुरुष	तुमने फ़रेब किया।	तुम दोनों ने फ़रेब किया।	तुम सब ने फ़रेब किया।
स्त्रीलिंग मध्य पुरुष	तू स्त्री ने फ़रेब किया।	तुम दोनों स्त्रियों ने फ़रेब किया।	तुम सब स्त्रियों ने फ़रेब किया।
पुल्लिंग व स्त्रीलिंग उत्तम पुरुष	मैंने फ़रेब किया।		हमने फ़रेब किया।

क्या यदि "मक्र [कपट] के अर्थ बहुवचन अन्य पुरुष पुल्लिंग में "उन लोगों ने फरेब किया" हुये तो एक वचन

अन्य पुरुष पुल्लिंग में "उस आदमी ने उन लोगों को मक्र की खूब सजा दी" होंगे ? कदापि नहीं ! हां यदि "मक्र" के अर्थ "फ़रेब की सज़ा देने के लें" तो फिर हमें अन्य पुरुष बहु वचन में भी वही लेने पड़ेंगे अर्थात् "उन आदमियों ने खूब फरेब की सज़ा दी" और "खुदा ने भी उनको खूब फरेब की सज़ा दी" [एक वचन में] जो निपट अनुचित और बुद्धि बाह्य हैं ! क्योंकि इससे यह पता नहीं लग सक्ता कि उन आदमियों ने किसको फ़रेब की सज़ा दी ? क्या पैगम्बर ने प्रथम उनसे फ़रेब किया तो उन्होंने फ़रेब की सज़ा दी या क्या ? सारांश यह कि "मक्र [कपट]" के अर्थ फ़रेब की सजा देने के कदापि नहीं हो सक्ते । मुफस्सिर [भाष्यकार] लोग जान बूझ कर अशुद्ध अर्थ कर रहे हैं । इसी प्रकार कितने ही और भी शब्द हैं कि जिनके अशुद्ध अर्थ किये हैं । केवल इस हेतु से कि परमेश्वर [खुदा] पर जो मक्कार [कपटी] फ़रेबी [छली] मखोलिया [मसखरा] और लड़ाका आदि दोष लगाये हैं वह धुलजावें परन्तु अशुद्ध अर्थ करने से दोष नहीं धुला करता है !

तफ़सीरें [कुरान के भाष्य] बहुधा बिश्वास योग्य नहीं हैं । उनके ऐतिहासिक वृत्तों को किन्हीं अंशों में सत्य माना जासकता है यद्यपि इस विषय में भी कुरान के भाष्यकरों ने बहुधा स्थलों पर बड़ी २ अशुद्धियां की हैं ।

क्योंकि मेरा अभिप्राय यहां पर कुरान का कोई नया भाष्य करके आप महाशयों को दिखलाना नहीं है । अतएव मैं प्रत्येक विषय पर व्योरेवार वादविवाद से व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना चाहता हूँ भविष्य विषयों में केवल कुरान का प्रमाण मात्र देना ही उचित समझता हूँ । यदि किसी को सन्देह हो तो वह कुरान से देख सक्ता है ।

सी० ३ सू० उमरान् आ० ५३ ।

[२] कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा [परमेश्वर] फरेब करता है और धोखे बाजी करता है । किसी भलेमानस

आदमी पर जो सच्च मुच फ़रेबी न हो यदि यह दोष लगाया जावे तो वह पीछे पड़ जायगा और अदालत तक पहुंचेगा ! परन्तु परमेश्वर पर फ़रेबबाजी का दोषारोपण करना किसी बड़े ही साहसी मनुष्य का काम होसक्ता है ! शोक कि मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सक्ता ।

सी० ६ सू० अनफाल आ० ३०।

(३) कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा [परमेश्वर] आत्मिक रोगियों के आत्मिक रोगों को जान बूझ कर बढ़ाता है और फिर ऊपर से अज़ाब (दुःख) भी देता है । निस्सन्देह यह बहुत बड़ी निर्दैता और अन्याय है कोई बुद्धिमान पढ़ा लिखा ईश्वर को ऐसा अन्यायी और निर्दई स्वीकार नहीं कर सक्ता है ।

सी० १ सू० बकर आ० १० ।

(४) कुरान की यह शिक्षा है कि परमेश्वर बड़ा लड़ाका है, भला जब ईश्वर ही लड़ाका होगया तो फिर पृथ्वी पर सम्मेलन और शान्ति कौन स्थिर कर सक्ता है ! लड़ाका आदमी परमेश्वर को भी लड़ाका कह सकता है ! परन्तु वह जो लड़ाई से घृणा करता है । वह ईश्वर पर ऐसा भयानक दोष आरोपण नहीं कर सक्ता ! उचित था कि कुरान में ईश्वर को इन बातों के साथ स्मर्ण न किया जाता ! मुझे हार्दिक शोक है कि मैं कुरान की इस शिक्षा को नहीं मानसक्ता।

सी० ५ सू० नसाय आ० ८४।

(५) कुरान की यह शिक्षा है कि परमेश्वर मनुष्यों में वैर डाल देता है, प्रलय के दिन तक परस्पर का द्वेष फैला देता है । जिज्ञासू और ईश्वर प्रिय मनुष्यों के लिये इससे अधिक घृणित शिक्षा और क्या होसक्ती है ? कि जिस परमेश्वर को वह अपने जीवन का उद्देश्य और परम पिता समझता है उस पर ऐसे महान और दोषयुक्त धब्बे लगाये

जावे, यदि द्वेष फैलाने वाले और वैर डालने वाले मनुष्य परमेश्वर को भी द्वेष फैलाने वाला तथा वैरडालने वाला समझें तो सम्भव है । परन्तु ईश्वर प्रिय, शुद्ध ईश्वर पर ऐसा दोषारोपण नहीं कर सकता !

सी० ६ सू० मायदा आ० १४ ।

(६) कुरान की यह शिक्षा है कि परमेश्वर न्यायकारी है परन्तु तोवाह [प्रायश्चित्त] स्वीकार करलेता है और पाप [गुनाह] क्षमा कर देता है । भला न्याय और क्षमा [मुआफ़ी] का मेल कहां ? जहां मुआफी [क्षमा] आई न्याय दूर हुआ । संसार का सर्व शक्तिमान् महाराज जिस को चाहे छोड़दे जिसको चाहे मार डाले ! परन्तु इससे वह न्यायकारी नहीं होसक्ता ? ईश्वर विषय में यह शिक्षा महान् विवादास्पद है ।

सी० २ सू० बकर आ० १६१ ।

(७) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा क्षमा करने वाला (ग़फ़्फ़ार) है परन्तु कुरान को पढ़ते जाओ और नर्क के मनुष्यों के विलाप पर ध्यान दो कि किस प्रकार चिल्ला रहे हैं, ? क्षमा मांग रहे हैं और पछितावा कर रहे हैं, परन्तु परमेश्वर के कान वहरे होगये हैं, कुछ नहीं सुनता क्या परमेश्वर की क्षमा यदि कोई पदार्थ है तो प्रलय के दिन उड़ जायगी ? और परमात्मा ढीट होजायगा ।

ऐ चक्षू तू रक्त के आंसू वहा कि खुदा के विषय में कुरान की शिक्षा कैसी भद्दी है

सी० ५ सू० नसाय आ० ५५ ।

(८) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा बुराई को पसन्द नहीं करता, परन्तु कितनी लज्जा की बात है कि उसको वदी का पैदा करने वाला माना गया है । नादान लोग तक़दीर और तदवीर और आज़मायश आदि का

ढकोसला बीच में लाकर परमात्मा को इस दोष से बचाना चाहते हैं। परन्तु इससे उनका कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, जबतक कुरान उपस्थित है कुरानी परमात्मा इन दोषों से बच नहीं सक्ता ?

सी० ५ सू० नसाय आ० ७८

(९) कुरान की यह शिक्षा है कि जो कुछ होता है परमात्मा की आज्ञा से होता है। तो फिर व्यभिचारी मनुष्यों का व्यभिचार, मदिरापान, डांका, चोरी, प्राणघात, हत्या, लूटमार, इत्यादि सब कार्य परमात्मा की आज्ञा से ही हुए शैतान बिचारे को क्यों कलङ्कित किया जाता है। शोक ! अज्ञानी पुरुषों ने परमात्मा को क्या तमाशा बना दिया।

सी० ११ सू० यूनुस आ० ४९

(१०) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा मनुष्यों के उपदेश के लिये नबी भेजता है। परन्तु कुरान में स्थान २ पर देखोगे कि परमात्मा ही जान बूझ कर मनुष्यों को कुमार्ग में लेजा रहा है। और वह स्वयं ही इस बात का पक्षपाती माना गया है; "हा हम गुमराह करते हैं और जिसको हम गुमराह करते हैं उसको कोई राह नहीं दिखा सक्ता" भला फिर पैगम्बरों के परिश्रम करने की क्या आवश्यकता और पुस्तकों के भरमार का क्या प्रयोजन ? और शैतानों को दोषी ठहराने की क्यों आवश्यक्ता पड़ी।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४५

(११) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा पवित्रता को पसन्द करता है। परन्तु कुरान को पढ़ने से पता लगता है कि "खुदा ने नापाक दिल को पाक न करना चाहा बल्कि नापाकी को और भी अधिक कर दिया और गुमराही (सत्मार्ग विमुखता) बढ़ादी" बच्चों कासा खेल है ! एक तुच्छ

बात को स्थिर रखने के हेतु बहुत कुछ गढ़न्त करनी पड़ी परन्तु निष्प्रयोजन !

सी० १ सू० मायदा आ० ४४

(१२) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा सब दोषों से रहित है, परन्तु देखिये शैतान का बहकाने वाला और गुमराह करने वाला (सत्मार्ग से भुलावा देने वाला) परमात्मा ही है हम शैतानी ढकोसले से कल्पना कर सक्ते हैं कि शैतान लोगों को बहकाता है, परन्तु शैतान का बहकाने वाला परमात्मा है ! शैतान ने स्वयं परमात्मा के सम्मुख कह दिया कि ऐ परमात्मा जिस प्रकार तूने मुझे भुलावा दिया मैं भी इसी प्रकार तेरे मनुष्यों को बहकाऊंगा !

परमात्मा शैतान की इस बात को सुनकर केवल नर्क की धमकी देकर चुप हो रहा और इस विषय में मुख तक न खोला और यह न कह सका कि ऐ शैतान मैंने तुम को नहीं बहकाया ! कहता तो तब जब कि उस ने भुलावा न दिया होता ! शोक कि परमात्मा को कितना दूषित किया गया है कि मानो शैतान का शैतान बना दिया गया है ! ऐ हृदय तू रोदन कर और अपने भाइयों के लिये आंसू बहा !

सी० ८ सू० एराफ आ० १६ ।

(१३) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा ठट्ठा मसखरी करने वालों को पसन्द नहीं करता, परन्तु शोक ! वही परमात्मा ठठोरा, मसखरा, माना गया है ! परमात्मा को भङ्गड़ीन का भङ्गड़ी बना दिया ! जहां भङ्गड़ी भङ्ग पीकर एक दूसरे से ठठोल करते हैं ! वहां परमात्मा भी बीच में आ कूदता है और वैसाही भङ्गड़ीपन आरम्भ कर देता है, यह कितनी लज्जास्पद बात है कि परमात्मा मसखरा और ठठोर कहा जावे ! परमात्मा पर ऐसे दोषारोपण वह पुरुष कर सक्ता है जो या तो नास्तिक हो या जिस ने ईश्वर के भावको

निपट न जाना हो। मुझे नहीं विदित कि मैं अपने मस्तिष्क को ऐसा रही किस प्रकार बनालूं कि इस शिक्षा को मानने लगजाऊं. कहां से मैं अपने ऊपर द्वेष की काली चद्दरें ओढ़लूं कि परमेश्वर ठठोरा दृष्टि पड़ने लग जावे!

सी० १ सू० बकर आ० २५

(१४) कुरान की यह शिक्षा है कि परमेश्वर सौगन्द खाने को अच्छा नहीं समझता, परन्तु कुरान के पृष्ठों को पलटो देखोगे कि एक विश्वास रहित और झूंठे पुरुष की समान कि जिसकी बात का कोई भरोसा न करता हो, और विवश सौगन्द खाने पर उतारू होता हो, परमेश्वर घोड़ों, ऊंटों, वृक्षों, पर्वतों, पुस्तकों, वायु, सूर्य्य, चंद्रमा, नक्षत्रों इत्यादि की अनेक बार सौगन्द खारहा है, मानो इसकी बात का कोई विश्वास नहीं करता है, अतएव. सौगन्द खाने पर विदित होता है। द्वितीय सौगन्द उस पदार्थ की खाई जाती है कि जिसको सौगन्द खाने वाला अपने से बड़ा प्रतिष्ठा योग्य तथा पूजनीय समझता है क्या घोड़े, ऊँट, पहाड़, पत्थर इत्यादि को परमात्मा अपने से बड़ा समझ कर इनकी सौगन्ध खाता है? या कुछ और भेद है। आज कल यदि कोई पुरुष अपने वर्णन को प्रमाणित ठहराने के लिये, न्यायालय में अथवा पञ्चायत में अपने घोड़े या ऊँट या पहाड़ की सौगंद खावे तो उस पर हँसी उड़ाई जाती है। विदित नहीं कि अरबी परमात्मा ने अरब निवासियों का अनुकरण क्यों किया? और जिन वस्तुओं की अरब निवासी सौगन्द खाते थे उनकी सौगन्द क्यों खाई! भारत वर्ष के आम आड़ू आलूचे, गंगा, यमुना, और हिमालय की सौगन्द क्यों न खाई यह केवल बालकों को सुलाने के दुलराव का गीत (लोरी) है! और परमात्मा का नाम बदनाम किया है। मैं इस के अतिरिक्त कि अपने भाइयों के अर्थ आंसू बहाऊँ और क्या कर सक्ता हूँ।

सी० ३० सू० शम्स आ० १-६

(१५) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा "कुन" कहने से सब कुछ कर सक्ता है परन्तु क्या वह उन्मत्त हो गया था, वा अपनी "कुन" की शक्ति को भूल गया था कि उसने व्यर्थ पृथ्वी और आकाश बनाने में छः दिवस लगा दिये "कुन" ही क्यों नहीं कह दिया था तीन दिन में ही सब कुछ क्यों न बना दिया।

सी० १६ सू० मरयम आ० ३६

(१६) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा अति पवित्र है, परन्तु कुरान को पढ़ने से विदित होता है कि उसकी आत्मा एक स्त्री के गर्भाशय में भी जासक्ती है और मासिक धर्म का रज खासक्ती है और नौ मास अपवित्रता में पड़ी रहकर वर्षों तक मनुष्यों के शरीर में बंध को प्राप्त होकर फांसी द्वारा मुक्त होसक्ती है। मुझे हार्दिक शोक है कि कुरान ने बाइबिल का अनुकरण किया।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ६१

(१७) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा पृथ्वी और आकाश पर सिंहासन आरूढ़ है मानो सब स्थानों पर उपस्थित और दृष्टी है उसका कोई विशेष स्थान नहीं है। परन्तु आकाश के ऊपर अर्श को ८ फ़रिस्तों का शिर पर उठाये हुए खड़े होना जबराईल का परमात्मा की ओर से उतरना, महात्मा ईसा का आकाश पर उड़जाना, अरबी पैग़म्बर का बुराक़ (गदहा विशेष) पर सवार होकर आः काश की सैर और परमात्मा से बात चीत कर आना, शैतानों का आकाश पर जाकर छिप छिप कर परमात्मा और फ़रिस्तों की बात चीत का सुनना, और उन पर तारागण तोड़ कर मारे जाना इत्यादि २ क्या यह इस प्रकार के ढकोसले हैं कि जिन से यह साबित होसके कि परमात्मा पृथ्वी पर भी है यदि पृथ्वी पर भी होता तो फिर उपरोक्त ढकोसलों की क्या ज़रूरत थी! रोते हुए बालक को बहलाने के

लिये यह कहानियां लाभकारी होसक्ती हैं परन्तु जिज्ञासू इन को परमात्मा की अपकीरति और अप्रशंसा समझता है निदान मैं अपने भाइयों के अर्थ ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करता हूं कि वह सत्यवेत्ता होसकें !

सी० २ सू० बकर आ० २५५

१८ कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा मुशरिकों × से शोकातुर है मुशरिक अपवित्र हैं। परन्तु सब से पूर्व खुदा में 'शिर्क' (प्रभु के साथ अन्य को मिलाने) की शिक्षा फ़रिस्तों को दी कि आदमी को डण्डवत करो और जब एक फ़रिस्ते ने परमात्मा के सिवाय अन्य को मानने से नाहीं की तो उसको मलाऊन * कर दिया। अब दण्ड किसको मिले शैतान को या परमात्मा को ? मुशरिक कौन हुआ परमात्मा वा शैतान !

सी० १ सू० बकर आ० ३४

(१६) कुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा किसी को नहीं सताता ! भला परमात्मा ने कुछ मनुष्यों के निमित्त कि जिन्हों ने नूह का कहना न माना, सर्व संसार को क्यों डुबो दिया ! और मनुष्यों ने क्या पाप किया था ? पशुओं का क्या दोष था ! कि इन सब को भी तूफ़ान में डुबो दिया। और फिर बढ़ २ कर बातें मारने लगा कि हमने नूह का तूफान उतार कर सब को डुबो दिया। क्या निरपराध पशुओं और मनुष्यों को डुबो देना, निर्दई का काम नहीं है तो और किसका है और निर्दई को जो दण्ड है वह प्रत्यक्ष

× एक परमेश्वर के साथ किसी और को भी मिलाकर परमेश्वर मानने वाले पुरुष को 'मुशरिक' कहते हैं।

* ईश्वर के न्यायालय से जो निन्दा करके निकाला जावे उसे 'मलाऊन' कहते हैं अभिप्राय शैतान से है।

है । अब परमात्मा को नर्क में डाला जावे या जिसने कि परमात्मा पर यह मनगढ़ंत दोषारोपण किये हैं उसको !

सी० १८ सू० गाशियह आ० २७

(२०) क़ुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा ने बहुधा मनुष्यों के अन्तःकरणों पर मुहर लगादी और कानों पर पर्दे डाल दिये कि वह उसकी बात को न समझ सकें परन्तु फिर उनको समझाने के लिये नबी भेजना निपट अज्ञानता है । और जब कि उसने स्वयं ही कानों पर मोहर लगादी तो दण्ड उनको क्यों चाहिये ? परमात्मा स्वयं नर्क में पड़े या जो इस प्रकार की फिलासफी (तत्वज्ञान की पुस्तक) बनाता हो वह ?

सी० १ सू० बक़र आ० ७

शोक ! महान् शोक ! सत्य मार्ग की शिक्षा कहां ?

(२१) क़ुरान की यह शिक्षा है कि परमात्मा किसी की सिफारिश स्वीकार नहीं करता परन्तु तत्काल ही फिर कह दिया कि हां कतिपय पुरुषों की सिफारिश वह स्वीकार करेगा । भला सिफारिश और पाप का क्या सम्बन्ध ? क़ुरानी परमात्मा एक स्वतन्त्र नियम शून्य राजा है कि जिस के सम्मुख अपराधी लाये जाते हैं मन्त्री सिफारिश कर रहा है अन्य अधिकारी राज्य के अन्य कार्य्य भुगता रहे हैं और अच्छा औरङ्गज़ेबी दरबार लगा हुआ है; खुदा करे कि मेरे भाइयों की आंखें खुलें और सत्यता का प्रकाश दिखाई दे. उपरोक्त थोड़ी सी बातें क़ुरानी खुदा के सम्बन्ध में हैं जिन के पढ़ने से इसका अनुमान हो सक्ता है कि वह क्या "बला" है और किस मस्तिष्क ने उसको गढ़ा है क्या खुदा सम्बन्धी ऐसी शिक्षा आत्मिक शिक्षा का खून नहीं करती ! क्या मक्कार, धोखेबाज, लड़ाके, झगड़ालू की रखने वाले, मसखरे, ठठोल, अन्यायी आदि गुणों से भूषित खुदा की

उपासना करने से हम में उपरोक्त अवगुण प्रवेश न करेंगे ! और क्या हमारी आत्मा का इस से खून न होगा ? उपस्थित सज्जन ! इस का स्वयम् उत्तर दें । खुदा सम्बन्धी यह शिक्षा उन सम्पूर्ण अच्छी बातों पर भी कालोंछ लगाती हैं जो कुरान में कहीं २ रेतेली जंगल के वृक्ष कुंज की भांति लिखी है यही नहीं कि कुरान खुदा की पुस्तक होने के दरजे से गिरजाता है किन्तु वह एक साधारण पुस्तक से भी नीचे हो जाता है-

सी० २ सू० वकर आ० २५५

इस के सिवाय दूसरी बात जो कुरान की शिक्षा में अस्वीकार करने योग्य है वह मनुष्योत्पत्ति है-मुझे शोक के साथ कहना पड़ता है कि बाइबिल से ली हुई कहानियों का नाम खुदाई वाणी रख दिया गया है । आदम की कहानी जो बाईबिल में है उसी को कुछ हेर फेर करके कुरान में लिखा गया है-कुरानी बाबाआदम कोई नई बला नहीं है किन्तु उसकी कहानी बच्चा बच्चा जानता है-मैं इस बात को आदर्श बनाकर कि ऐसी झूठी बातों का एक खुदाई पुस्तक का दम भरने वाली पुस्तक में होना अयोग्य है कुछ बातें नीचे लिखता हूं—

[२२] कुरान की यह शिक्षा है कि ईश्वर ने आदम को मिट्टी से बनाया और उसमें जीवन डाला अर्थात् प्रथम एक मिट्टी का पुतला बनाया और फिर उसमें आत्मा का प्रवेश किया गया वह आत्मा कहां से आई ? यदि हम यह कहें कि ईश्वर ने अपनी आत्मा उसमें डाली तो मानना पड़ेगा कि ईश्वर में भी वह अवगुण हैं जो उसके एक आत्मा में (जो आदम में आया) थे यदि यह कहें कि ईश्वर ने अभाव से भाव (आत्मा) उत्पन्न किया तो यह सर्वथा झूठ है-क्योंकि अभाव से भाव नहीं होसक्ता-अभाव नामही उस वस्तु का

है कि जिस का कोई स्तत्व नहीं होसक्ता, अतएव कुरान की इस शिक्षा को मैं स्वीकार नहीं करसक्ता !

सी० १४ सू० हजर आ० २८-२९ ।

[२३] कुरान की यह शिक्षा है कि ईश्वर ने आदम से उसकी बीबी को उत्पन्न किया परन्तु यह स्पष्ट नहीं कि वह उससे किस प्रकार पैदा की गई भला आदम (के पेट) में स्त्रियों की भांति गर्भाशय था यदि था और उससे उत्पत्ती हुई तो वीर्य्य कहां से आया ईश्वर के यहां से गिरा अथवा किसी फरिशते ने आदम में गर्भ स्थापित किया और क्या फिर एक बीबी को उत्पन्न करके आदम का गर्भाशय गुम होगया अधिक सन्तान उससे क्यों न पैदा हुई ? इस दशा में आदम को हम पुरुष कहें अथवा स्त्री ? यदि पुरुष तो उसके पेट से उसकी बीबी किस प्रकार उत्पन्न हुई ? यदि स्त्री तो फिर उसको एक और स्त्री की क्या आवश्यकता ? यदि हम यह कहें कि आदम गर्भाशय रहित तो था परन्तु उसकी बीबी उसकी पसली से उत्पन्न की गई यह भी हंसी की बात है और भला ईश्वर को आदम की पसली तोड़ने की क्या आवश्यकता थी ? मिट्टी शेष नहीं रही थी या ईश्वर आदम का पुतला बनाकर ही भूल गया था अथवा दूसरा पुतला बनाना ही भूल गया था ? जिस प्रकार एक पुतला बनाया था उसी प्रकार उसी के साथ उसकी स्त्री का पुतला भी तय्यार करके उसमें भी फूंक भर देता । इसके अतिरिक्त ईश्वर के स्मरण शक्ती के अच्छे न होने का हेतु भी देखो जब ईश्वर ने बाइबिल उतारा तो वहां ही आदम की बीबी का नाम बता दिया परन्तु कुरान में नाम बताना भी भूलगया सम्भव है कि यह इस लिये हो कि जहां बाइबिल से और बहुत सी बातें कुरानानुयायी पुरुषों को मिलेंगी वहां आदम की स्त्री का नाम भी मिल जायगा । ईश्वर मेरे भाइयों के हृदय में सत्य का प्रकाश करे !

सी० २३ सू० जुमर आ० ४

[२४] कुरान की यह शिक्षा है कि—खुदा ने आदम को उसकी स्त्री सहित वैकुण्ठ में रख दिया कि भली भांति खाओ, पियो परन्तु इस वृक्ष के पास मत जाना-पापी होजा-ओगे—हमें कुरान से अनार अँगूर, जैतून, केले आदि वृक्षों के नाम तो मिलते हैं परन्तु उस वृक्ष का नाम कहीं नहीं मिलता जिसके पास जाने की मनाई की गई थी—इसके लिये फिर हमें बाइबिल खोजनी पड़ती है—क्योंकि वह कुरान की अपेक्षा अधिक प्रमाणिक तथा प्राचीन है—सम्भव है कि जब ईश्वर ने बाइबिल उतारी उस समय वह वृक्ष हो और जब कुरान उतारा तो उस समय उसका नाश होचुका हो ! यहां तक कि उसका नाम भी लोहे महफ़ूज़ (संरक्षित पटिका) से घिस कर मिट गया हो ! चेतनाप्रिय पुरुष पूछ सक्ता है कि जब आदम सस्त्रीक बहिश्त का स्वाद ले रहे थे तो उस समय वहां की हूरें (अप्सरायें) तथा गिलमान (बिना डाढ़ी मूँछ के लड़के) कहां थे ? उनको आदम के साथ नीचे क्यों न फेंका ? अथवा हूरें तथा गिलमान उत्पन्न ही उस समय किये गये जब कि आदमकी कहानी तमाम होचुकी थी और जबराईल (एक मुसलमानी फिरिश्तेका नाम) अरब के रेतीले मैदानों में पर मारता उड़ता हुआ अरबियों को हूरों के मिलने का सुसमाचार सुनाकर लड़ाई के लिये उकसा रहा था ! मेरे विचार में हूरें केवल कुरानी बेचा हैं कुरानही के साथ इनकी उत्पत्ति हुई और उसके साथ ही वह समाप्त हो जावेंगी परन्तु शोक कि कितने मेरे ना समझ भाई ऐसे हैं जो हूरों के पीछे मर रहे हैं । भाइयो ! हूरें केवल "मनमोदक" हैं आप सत्यप्रिय बनें ।

सी. १ मू० बकर आ० ३५

(२५) कुरान की यह शिक्षा है कि आदम सस्त्रीक बहिश्त से निकाला गया और पृथवी पर फेंका गया इत्या-दि २ जिस का न शिर है न पैर है; कहीं की ईंट कहीं का

रोड़ा इकट्ठा कर दिया गया है। वाईविल के पढ़ने से बाबा आदम की कहानी न्यून से न्यून एक क्रमवद्ध कहानी प्रतीत होती है परन्तु क़ुरान में क्रम भी नहीं है बीसों बार आदम की कहानी आरम्भ की गई है। परन्तु दो तीन बातों के दुहराने के अतिरिक्त और कुछ मस्तिष्क के भीतर से नहीं निकल सका। निदान मनुष्य मनुष्य ही है इतनी बातें जो प्रतिदिन सुनी जाती हैं उन में से किस २ को याद रक्खे जो याद रह गई वह स्वप्न में दिखाई दे गई। प्रतिफल यह कि आदम और उस की स्त्री की कहानी वाईविल के संग्रह में देखने की जगह स्वयं वाईविल ही में देख सके हैं। वहां सविस्तार वर्णन किया गया है—वह अन्धकार का समय अब शेष नहीं रहा जब कि इस प्रकार की अनर्गल कहानियों को सुनाकर लोगों को श्रधालू बना लिया जाता था, अब लोग ऐसे ढकोसलों को स्वीकार करने के लिये तय्यार नहीं हैं! चाहे इन फटी पुरानी कहानियों पर प्रकाश का मुलम्मा भी चढ़ा दिया जावे। इस के अतिरिक्त प्रलय के सम्बन्ध में, क़ुरान की शिक्षा को मैं, स्वीकार नहीं कर सकता। मेरे कितने ही भाई हैं जो, आखें बन्द करके उसको सत्य मानते हैं। परन्तु मुझे हार्दिक शोक है कि मैं उनसे सहमत नहीं हो सकता।

सी १ सू० वकर आ० ३५

(२६) क़ुरान की यह शिक्षा है कि एक दिन नरसिंगा बजाया जावेगा तमाम प्राणी मर जावेंगे। यह अज्ञात है कि कि यह नरसिंगा कहां फूंका जावेगा, और उस का नाद सम्पूर्ण पृथिवी पर एक साथ किस प्रकार पहुँचेगा! और समस्त प्राणी एक साथ किस प्रकार नाश हो जावेंगे तथा यह बातें कब होंगी? और फिर खुद सकल सृष्टि का नाश करके कुछ को सदा के लिये वैकुण्ठ में और कुछ को सदा के लिये नर्क के घोर दुःखों में डाल कर आप सदा के लिये

निपट बेकार होजावेगा और संसार के झगड़ों से मुक्त हो कर सो रहेगा अथवा क्या करेगा ? शोक है कि मैं प्रलय के नरसिंगे आदि को स्वीकार नहीं कर सकता।

सी० ३० सू० विनी आ० १८

(२७) कुरान की शिक्षा यह है कि खुदा फिरिश्तों की लैन बांध कर प्रलय के मैदान में आवेगा उसके तख्त को ८ फिरिश्ते उठाये हुए होंगे। भला यदि खुदा तथा अर्श, साकार तथा सीमा-वाली वस्तुयें नहीं हैं तो फिर उसके उठाने के लिये साकार फिरिश्तों का होना क्यों है ? यदि कोई कहे कि फिरिश्ते भी साकार नहीं हैं। तो जबराईल, मैकाईल आदि के पर तथा शरीर का वर्णन करने की क्या आवश्यकता थी ? मरियम के पास मनुष्य की आकृति में फिरिश्ता भेजने का क्या अर्थ हो सकता है ? कुरान की शिक्षा से फ़िरिश्ते साकार सिद्ध होते हैं ! इसी प्रकार खुदा भी जो अर्श पर बैठा हुआ आज्ञायें जारी कर रहा है और कभी २ अग्नि की आकृति में पहाड़ों तथा मैदानों में भी उतरता है।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० १०४

(२८) कुरान की यह शिक्षा है कि मुर्दे जाग उठेंगे यह आश्चर्य जनक वार्ता है कि घास पात की भांति मुर्दे से शिर निकालेंगे ! भला जो जला दिये गये, जिनकी राख नदियों में बहा दीगई, जिनको सिंह भेड़िये खा गये, वह कबरों में से क्यों कर उत्पन्न होजावेंगे ! बहुधा मुसलमान शरीरों का जीवित होना नहीं मानते परन्तु कुरान में अनेक स्थलों पर शरीरों के जीवित होने के उदाहरण देकर समझाया गया है कि लोग इस पर विश्वास करें कि उनके शरीर फिर जीवित किये जावेंगे।

सी० ३० सू० फज्र आ० २२

(२६) कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा तराजू लगा कर बैठेगा और लोगों के अच्छे बुरे कर्मों को तोलेगा और स्वर्ग में जाने वालों को उनके कर्म पत्र दायें हाथ में और नर्क में प्रवेश करने वालों के बायें हाथ में देगा यह ज्ञात नहीं होता कि खुदा को दुकानदारों की भांति तखरी बाटों की क्या आवश्यक्ता पड़ेगी ? भला कर्म भी कोई ठोस वस्तु है, कि जिनको तोल लिया जायगा ? कर्मों का तोलना ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुरुष तखरी बाटों के साथ अपने वहमी ख्यालात को तोलने लगजावे जो सर्वथा पागलपन है। ईश्वर यदि सर्वज्ञ है तो शीघ्र ही उसे सबको बतला देना चाहिये कि तुम्हारे यह २ कर्म हैं निस्प्रयोजन दुःख उठाने की क्या आवश्यक्ता है।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ४७

(३०) कुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन पहाड़ रुई की तरह उड़ते फिरेंगे। गप भी यदि मारी जावे तो कुछ बढ़कर ! भला हिमालय पहाड़ जो कई सौ मील लम्बा तथा कितने ही मील चौड़ा है उड़कर कहां जावेगा ? उधर अमरीका तथा योरुप के पहाड़ रुई की भांति उड़कर किस आकाश में पहुँचेंगे ?

सी० ३० सू० अलकारअ आ० ४

(३१) कुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन चंद्रमा सूर्य से जा मिलेगा परन्तु अन्य ग्रह जो सूर्य तथा चन्द्रमा से भी बड़े हैं वह कहां जावेंगे ! उन नक्षत्रों का कहीं ईश्वर ने नाम तक नहीं लिया क्या इस लिये कि अरब के लोग उस समय तक उनके नाम से अनभिज्ञ थे।

सी. २६ सू. कयामत आ. ६

(३२) कुरान की यह शिक्षा है कि सितारे गिर पड़ेंगे। भला वह गिर कर कहां जावेंगे। क्या पृथिवी पर आजावेंगे ? यदि हां ! तो पृथ्वी पर इतने ग्रहों के लिये स्थान

कहां होगा ! और जब खुदा पृथ्वी को भी लपेट लेगा, तो फिर ग्रह किधर भागेंगे ? मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सक्ता।

सी. ३० सू. इन्कतार आ. २

(२३) कुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन पृथिवी बातें करेगी और ईश्वर को अपनी सारी कहानी सुनावेगी, परन्तु यह ज्ञात नहीं कि सूर्य तथा चन्द्रमा क्यों बातें नहीं करेंगे। अन्य ग्रह क्यों चुप रहेंगे ? यह सब विद्याहीन पुरुषों की बातें हैं जिनको स्वीकार नहीं करसक्ता।

सी० ३० सू० ज़ुल ज़ाल आ० ४।५

(२४) कुरान की यह शिक्षा है कि प्रलय के दिन ईश्वर लोगों के मुख पर तो मुहर लगा देगा और उनके हाथ, पांव कान, और त्वचा आदि बोलेंगे और मनुष्य के कर्म्मों को बतावेंगे। मनुष्य उन की इस क्रूरता को देखकर कहेगा कि तुम मेरे विपरीत साक्षी क्यों देते हो ! यह बड़ी आश्चर्य्य युक्त बात है कि मनुष्य के हाथ पांव आदि जिह्वा का कार्य्य करेंगे। मैं इस को नहीं मान सक्ता।

सी० २४ सू० हमसिजदा आ० २०-२१

उपरोक्त प्रलय सम्बन्धी ढकोसलों को छोड़कर स्वर्ग सम्बन्धी कुरानकी शिक्षा और भी कुत्सित और घिनावनी है। सच पूछो तो कुरान की शिक्षा ने स्वर्ग को ऐसा बुरा घर बना दिया है कि जहां जाना भलेमान्सों का काम तो कदापि नहीं है, परन्तु कितने ही मूर्ख लोग स्वर्ग की बात ठीक मान कर रात दिन उसकी प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं। और मन गढ़न्त बातों का आखेट बन कर वास्तविक सचाई को हाथ से गमा बैठे हैं। कुरानी स्वर्ग क्या वस्तु है ? इस का कुछ चित्र खींचकर आप के सन्मुख उपस्थित करता हूं।

(२५)-कुरान की यह शिक्षा है कि अच्छे कर्म्म करो जिस से सदैव के लिये स्वर्ग में जाओ जहां दुःख का लेश

मात्र भी नहीं है। प्रथम तो यही विवादास्पद है कि मनुष्य कदापि एक दशा में रहना स्वीकार नहीं कर सकता है? यदि इस को नित्य सुख प्राप्त हो जावे तो वह प्रसन्नता इस को उसी प्रकार दुःखदाई हो जायगी जिस प्रकार वनी इसराईल (मूसा के अनुयायी लोगों) के लिये 'मन' (एक खाने का पदार्थ जो वनी इसराईल के लिये आकाश से गिरता था) तथा वटेर हो गई, जिनके बदले उन्हों ने ईश्वर से लहसन पियाज मौंठ तथा मूंगकी दाल मांगी ! स्वर्ग वासी लोग जब वहां के अच्छे २ भोजन खाते २ थकजावेंगे तो उन को नर्क की आकांक्षा करनी पड़ेगी, विशेष कर जब कि इस स्वर्ग में निम्न पदार्थ होंगे !

सी० १ सू० बकर आ० ८१ ॥

(३६) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में पीने के लिये शराब तथा खाने के लिये कबाब मिलेंगे । वाह ! शराब तथा कबाब का क्या अच्छा जोड़ मिलाया है ! भला पशु जो बध किये जावेंगे उन का रक्त कहां गिरेगा ! यदि विनावध किए ही पशु पक्षी आदि भून लिये जावेंगे तो क्या वह (हराम) त्याज्य न होंगे ! शोक है कि मेरे कितने ही भाई केवल शराब के प्यालों तथा पशु पक्षियों के मांस के लिये नुमाज़ रोजे हज तथा जकात (दान) आदि कार्य्य करनेका कष्ट उठा रहे हैं ।

सी० २७ सू० वाकआ आ० १८-२१

(३७) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में रेशमी कपड़े पहिनने को मिलेंगे पाठकगण रेशम के साथ आप के सम्मुख शीघ्र ही रेशम के कीड़ों, शहतूत के वृक्षों तथा कपड़ा बुन्ने की कलों का चित्र आसक्ता है, इतना सामान स्वर्ग में कहां से आवेगा और इतने रेशमी कपड़े कौन बुनेगा क्या खुदा बुनेगा? यदि नहीं तो स्वर्ग के कुछ मनुष्य बुनेंगे? यदि हां! तो फिर वहां भी उन को साधारण मजदूरों की भांति सेवा करनी पड़ेगी। विशेषता क्या हुई? शोक है मेरे भाई रेशमी

कीड़ों के थूक आदि से बने हुये कपड़ों के आसक्त होकर कितने धोके में फंस रहे हैं !

सी २६ सू० दहर आ १२-१३ ॥

(३८) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में दूध तथा शहद की नहरें होंगी। भला यदि दूध और शहद की नहरें होंगी तो दूध के लिये भैंसों तथा शहद के लिये मक्खियों की भी आवश्यकता पड़सक्ती है, जो एक साधारण बात है।

सी. २६ सू. मोहम्मद आ. १६

(३९) कुरान के भाष्यकारों ने तो यहां तक गप्प हांकी है कि जो मनुष्य एक बार 'कौसर' तथा 'तसनीम' (स्वर्ग की नहरों) से पानी पी लेगा, उसको फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। यदि प्यास नहीं लगेगी तो फिर नहरों के रखने से क्या लाभ ? यदि यह कहा जावे कि स्नान के लिये तो कौनसा बुद्धिमान् पुरुष है जो शरबत, शहद तथा दूध से स्नान करेगा ! शोक है कि नहरों का पानी पीने के लिये भलाई कीजावे !

(४०) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में निवास करने वालों को सोने तथा चांदी के कंगन पहनाये जावेंगे। भला यह कौनसी सभ्यता है कि स्त्रियों का आभूषण (गहना) पुरुष पहनने लगें !

सी.- १५ सू. कहफ आ. ३२.

भला विचारिये तो कि यदि एक पढ़ा लिखा बीए. एम. ए. अथवा कोई मौलवी साहिब ही कगनों की जोड़ी पहन कर बाज़ार में फिरें तो उसको कितनी लज्जा आवेगी और लोग उसका कितना ठठोल मचावेंगे क्या स्वर्ग में जाने से यह लज्जा जाती रहेगी ? और क्या हमारे इस समय के बड़े २ सुधारक गण जो आभूषण पहननेसें कतराते हैं, वहां

हीजड़ों तथा स्त्रियों की भांति कंगन पहन कर फिरा करेंगे कंगन बनाने के लिये सोना चांदी सुनार कोयला तथा भट्ठी आदि की भी आवश्यक्ता पड़ेगी वा खुदा स्वयं बनाकर दे दिया करेगा कितने ही मेरे भाई सोने चांदी के कंगन पहनने के लिये नमाज़ रोज़े हज़ तथा ज़कात आदि करते हैं शोक का स्थल है कि कंगनों की जोड़ी के लिये सेवा कीजावे!

(४१) कुरान की यह शिक्षा है कि स्वर्ग में लोगों को गोरी कारी युवा तथा काली आंखों वाली स्त्रियां मिलेंगी। उपस्थित गण जिस प्रयोजन के लिये यह होंगी वह आप स्वयम् ही समझ सक्ते हैं! ब्रह्मचारी इस प्रकार अश्लील बातों को मुँह पर लाना भी महान पाप समझाता है! शोक! शोक!! शत शोक!!! उत्तम हो कि स्वर्ग के स्थान में लाहोर का अनारकली बाज़ार (भले मानस आदमियों को उससे निकालकर) रख दिया जावे छी! छी!! नमाज़ रोज़े और अन्य कार्य किस ओर वह रहे हैं और क्या पदार्थ (सौदा) क्रय कर रहे हैं? यदि मैं अपने भाइयों की ऐसी शिक्षा पर चार २ आंसू बहाऊं और इनको स्वर्ग के दुर्व्यसनों से बचाने के लिये रोदन करूं तो यह मेरा मुख्य कर्त्तव्य है!

सी. २७ सू. रहमान आ. ५५-७२

(४२) कुरान की यह शिक्षा है कि-स्वर्ग वालों को लड़के भी मिलेंगे जो बिना डाढ़ी मूँछ के युवा होंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि लड़कों की वहां क्या आवश्यक्ता है? लड़के किनको मिलेंगे पुरुषों को अथवा स्त्रियों को? न्याय तो यही चाहता है कि जब एक २ पुरुष को बहुत सी हूरें मिलेंगी तो एक २ स्त्री को बहुत से युवा लड़के मिलने चाहियें। परन्तु कुरान से इसका निबटारा नहीं है बुद्धिमान तथा न्यायप्रिय पुरुष स्वयम् इसका निबटारा करसक्ते हैं मैं खुदा

से प्रार्थी हूं कि वह सबको उपरोक्त स्वर्ग से बचावें ।

सी० २६ सू० ८८२ आ० १६

उपस्थित गण ! मेरी हार्दिक प्रार्थना का साथ दें वरन् एक पग आगे बढ़ावें-मैं आपको बताऊँगा कि उपरोक्त स्वर्ग के अतिरिक्त कुरान की शिक्षा मनुष्य को दयालु कदापि नहीं बनासक्ती क्योंकि जहां मांस भक्षण और बलिप्रदान है वहां दया का भाव कहां ? और इस कारण आत्मिक शिक्षा का भी अभाव है । कुरान की शिक्षा में से किसी ने मेरे कोमल हृदय पर इतनी चोट नहीं पहुँचाई जितनी कि मांस भक्षण तथा बलिप्रदान की शिक्षा ने । यदि आप में से कोई पुरुष मुझ से प्रश्न करें कि संसार में आत्मा का नष्ट करने वाला सबसे बड़ा पाप कौनसा है तो मैं शीघ्र ही उत्तर देदूंगा कि मांस भक्षण महान् पाप है । जो आत्मोन्नति के मार्ग में सब से बढ़कर रोक बनता हैं जिस हृदय के पास ही पेट में मांस के टुकड़े पड़े हैं और हड्डियों का रस भरा हुआ है, वहां आत्मिक तेज कहां ? मांस का टुकड़ा भीतर गया और आत्मिक शिक्षा का भाव बाहर हुआ ! यदि कोई पुरुष मेरे पास आकर कहे कि अमुक स्थान पर सुई के छेद में से हाथी निकल गया तो कदाचित् मैं इसको सत्य मानलूं, परंतु यदि कोई आकर यह कहे कि अमुक स्थान पर एक मांस भक्षक ने औलिया अल्लाह (ईश्वर प्राप्ति का आनन्द अनुभव करने वाला) अथवा पैगम्बर होकर, आत्मा के मर्म को जान लिया तो मैं इसको कदापि स्वीकार नहीं करूंगा । पत्थर है वह हृदय जो निरापराधी बकरी की बिलबलाहट को जो वह हनन किये जाने के समय करती है सुनकर पिघल नहीं जाता ? वहां आत्मिक शिक्षा का बीज कदापि नहीं उग सकता । मेरा हृदय दुःख से भर आता है जब कि मैं एक निरपराधिनी तथा जिह्वा रहित बकरी की आंसू भरी आंखों को क़साई की छुरी पर लगी हुई देखता हूँ ! जब कि

मैं कसाई को दोनों घुटने बकरी के तड़पते हुये शरीर पर रक्खे हुये और गले पर छुरी चलाते हुये देखता हूँ ! क्या लोहे की शलाखाओं में हरे पत्ते लगसक्ते हैं ? क्या कसाई और मांस भक्षक पुरुष के हृदय कभी आत्मिक शिक्षा की हरियाली से हरा भरा होसक्ता है नहीं ! कदापि नहीं !! यदि कोई मांस भक्षक आत्मिक शिक्षा का दम भरे तो उसको कहदेना चाहिये कि सिंह तथा व्रक (भेड़िये) आत्मिक शिक्षा प्राप्त नहीं करसक्ते !

दया जिसको धर्म का मूल कहा गया है हड्डी चूसने वालों के हृदय से उतनी दूर रहती है जितनी दूर सूर्य से पृथ्वी, सूर्य की किरणे पृथ्वी पर पड़सकती हैं परन्तु दया की किरण हड्डी चूसने के हृदय से सदैव दूर रहती है। इस लिये वह दयावान अथवा धार्मिक कदापि नहीं होसक्ता ! मुझे हार्दिक शोक के साथ कहना पड़ता है कि कुरान मांस भक्षण तथा बलिप्रदान की शिक्षा देता है मेरा हृदय रोदन करता है जब कि मैं बकरी के कण्ठ और कसाई की छूरी को स्वर्ग प्राप्ति के लिये कुरान में पृष्ठों में लिखा हुआ पाता हूं. उपस्थित गण देखें।

(४३) कुरान की शिक्षा है कि खुदा के नाम पर पशु वध करो उसका मांस आप खाओ अन्यों को खिलाओ कुरान के कुछ भाष्यकारों ने तो यहां तक भी वर्णन किया है कि जो पुरुष इस संसार में पशुओं का बलि-प्रदान करते हैं वह प्रलय के दिन उनके कन्धों पर चढ़ कर [बैतरणी को इस प्रकार पार कर जावेंगे जिस प्रकार बि-जली ! ईदुज्जुहा (मुसलमानी त्योहार) के दिन किसी मस्जिद में जाकर खुतबा (उपदेश) सुनियेः—' भाइयो ! धन्यवाद दो कि ईश्वर ने तुमसे दुम्बाभेड़ बकरी आदि कीही कुरबानी लेनी स्वीकार की है ! यदि इस्माईल का बध हो

जाता तो आज प्रत्येक मुसलमान को अपने बड़े बेटे का बलि प्रदान करना पड़ता इत्यादि २ लम्बी चौड़ी कहानी सुनाई जाती है सुनने वालों को भी धन्यवाद है ! कह देते हैं। परन्तु आप किञ्चित विचार तो करिये कि पशुओं का हनन करना कहां और मोक्ष कहां है ? शोक ! महा शोक ! पशु-वृत्ति तथा दुर्व्यसनों के वर्षों के पाले हुये भीतर के बकरे आत्मिक शिक्षा के भाव की हरियाली को दिन रात चर रहे हैं, उनको तो हनन न किया जावे, किन्तु निरपराधी जो घास पात खाने वाले भेड़, बकरी तथा गाय आदि लाभ दायक पशुओं का बध करके चित्त की वृत्तियों को और भी दुर्व्य-सनों की ओर लगायाजावे।

ईश्वर करे कि मुसलमानो तुम सच्चा बलिप्रदान कर सको। भेड़ बकरी, गाय तथा ऊंट आदि के हनन करने के स्थान में तुम अपने मन की कुत्सित चञ्चल वृत्तियों का हनन करके ईश्वर के न्यायालय में उपस्थित करके ऋषियों तथा मुनियों की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सको जब कि ईश्वर मांस चर्म, तथा रक्त पान नहीं करता तो फिर रक्त क्यों बहाते हो। हृदय की पवित्रता को उसके सम्मुख भेट करो।

सी० १७।सू०हज्ज आ० ३४–३७।

(३४) कुरान शिक्षा है कि मरे हुये सूकर तथा रक्त अभक्ष्य है। परन्तु विचार करिये कि मरा हुआ किसे कहते हैं वह जिस में प्राण निकल गये हो—चाहे लाठी मारने से चाहे छुरी के आघात से। शैतान का नाम लेकर हनन किया गया हो अथवा ईश्वर का नाम लेने से काटा गया हो. परन्तु मुर-दार वह है जिस में अब प्राण नहीं हैं। क्या ईश्वर का नाम लेने से यदि एक पशु वध किया जावे तो वह मुरदार अथवा प्राणरहित न हो जावेगा ? फिर वह हराम क्यों न हुआ ? फिर देखिये कि रक्त अभक्ष्य है मैं आप से पूछता हूं कि यदि रक्त अभक्ष्य है तो मांस क्यों भक्ष्य हो गया ? वह भी सर्वथा

अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह भी तो रक्त ही से बनता है। किञ्चिद् ध्यान दीजिये मादा के गर्भाशय में वीर्य्य उसके रक्त से पलता है उस की सम्पूर्ण हड्डी, पसली, मांस त्वचा, रक्त एक २ बिन्दु से बनती है और सम्पूर्ण शरीर रक्त ही से पलता है हड्डी रक्त से बनती है त्वचा तथा मांस भी रक्त से, चरबी भी रक्त से और स्वच्छ रक्त से, यह नहीं कि खाने में हड्डी तथा चरबी आदि पृथक २ उपस्थित होती हैं, पेट में जाकर हड्डी हड्डी के साथ और मांस मांस के साथ जा मिलता हो नहीं वरन् पहले रक्त बनता है, फिर रक्त से अन्य अवयव बनते हैं यदि रक्त से अभक्ष्य होगया तो मांस उस से भी बढ़कर अभक्ष्य हुआ क्योंकि वह रक्त का जमा हुआ सत है। परन्तु मेरे भाईयों को यह बात कौन समझावे। वहां तो पक्षपात का डेरा जमा हुआ है, किसी की शक्ति क्या कि वह उसके विपरीत कुछ कह सके? फिर पूछिये कि सुअर क्यों अभक्ष्य है? क्या इस लिये कि वह अपवित्र भक्षी है? यदि यही कारण है तो मुरगे, मुरगियां तथा भेड़ें भी अभक्ष्य होनी चाहियें। जो अपवित्र खाने वाले हैं अथवा इस लिये कि वह अधिक मैथुनप्रिय है—उसके मास से काम शक्ति अधिक उत्पन्न होती है? तो फिर मुरगे तथा बकरों से बढ़कर कौन से पशु अधिक काम प्रिय हैं वे भी अभक्ष्य होने चाहियें, मुझे कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि सुअर क्यों अभक्ष्य समझा जावे तथा अन्य पशु क्यों भक्ष समझे जावें।

सी० ६ सू० मायदा आ० ४

(४९) कुरान की शिक्षा है कि रुधिर अभक्ष्य है। यहां तक कि यदि उस की बूंद कपड़े पर लग जावे तो वह अपवित्र हो जाता है। तो क्या जमा हुआ रुधिर अर्थात् मांस खाने से देह आत्मा अपवित्र नहीं होंगे। शोक है कि शरीर और आत्मा को कपड़े से भी निकृष्ट समझा जावे।

सी ६ सू० मायदा ४।

(४६) कुरान की शिक्षा है कि बैतअल्लाह अर्थात् काबे के घर में, जो पवित्र स्थान मानागया है, रुधिर मत गिराओ क्या खुदा का घर अरब के एक कोने की चतुर्दिक सीमा तक ही है ? और शेष संसार शैतान का घर है ? कोई कारण विदित नहीं होता कि इस घर में तो लोहू गिराना, वर्जित किया जावे और दूसरे स्थानों में उचित समझा जावे। इस तो यह सिद्ध होता है कि खुदा एक स्थानीय है और अरब के एक कोने में अपना घर रखता है। शोक है! उन मनुष्यों की बुद्धि पर जो सारे संसार को ईश्वर का घर न समझ कर पशुओं के रुधिर से उसको अपवित्र कर रहे हैं। वह दिन कब आयेगा जब कि निर्दोष भेड़ बकरी के बच्चों का शोक जनक शब्द जो वह वध होते समय निकालता है मेरे भाइयों के हृदयों को इस प्रकार क्लेशित और अधीर करदेगा, जैसा कि उनके एक प्यारे बच्चे की बिलबिलाहट जिसका गला ईश्वर न करे कोई छुरी से काट रहा हो।

सी. ७ सू. मायदा आ. ६७

(४७) कुरान की शिक्षा है कि अहराम के दिनों में आखेट करना और किसी पशु का मारना त्याज्य है। अहराम उन दिनों को कहते हैं जब कि हाजी लोग खुदा के घर की यात्रा करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं, परन्तु क्या केवल अरबी मास की विशेष तिथि नियत हो सकती है जब कि मनुष्य को निर्दोष हो जाना उचित है। यदि हां तो मानना पड़ेगा कि खुदा भी फसली बटेरों की नाईं एक नियत समय पर अपने घर में उपस्थित होता है और शेष दिनों में लुप्त रहता है। परन्तु ऐसा नहीं। ईश्वर प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान में उपस्थित रहता है। वह जो पक्का हाजी है, वह सर्वदा निर्दोष जीवन व्यतीत करता है। और कभी भी पशुओं का रुधिर गिराकर

पृथिवी को अपवित्र नहीं करता और कभी भी निरपराध पशुओं का गला काट कर अपने चित्त से दया भाव को जो धर्म का मूल है हानि नहीं पहुंचाता वह सदैव ही आराम में रहता है और इसी लिये अरबी हाज़ी से बढ़कर कि जिसका अहराम थोड़े दिनों के लिये ही होता है, अधिक प्रतिष्ठा का भाग होता है। ईश्वर करे कि मुसलमानों में ऐसे निर्दोष हाजी उत्पन्न हों, केवल हाजी ही उत्पन्न न हों किन्तु बुद्धिमान् और ब्रह्मज्ञानी लोग उत्पन्न हों। जो उपरोक्त बातों को छोड़ने के अतिरिक्त निम्न लिखित सृष्टि विरुद्ध बातों को गहरी दृष्टि से देखें और उनसे चित्त हटावें। उपस्थित गण! मैं कुरानी शिक्षा की बातों में से कुछ बातें कि जिन पर सभ्य मनुष्य हँसी उड़ाते हैं आपके सम्मुख उपस्थित करता हूं॥

सी. ७ सू. मायदः आ. ९१—९८

(४८. कुरान की शिक्षा है कि महात्मा मूसा की लाठी का खुदा ने बड़ा भारी सांप बना दिया। जिस को देख कर फरऊन, जो एक नास्तिक राजा था, डरगया। उसने समझा कि मूसा एक जादूगर है। सब जादूगरों को उपस्थित होने की आज्ञा दी। जादूगरों ने लाठियों और रस्सियों के सांप बना दिये। मूसा भी यह दृश्य देखकर डरगया। खुदा ने उसी समय फ़रिश्ता भेजा कि मत डरे, तू, जीत जायगा अपनी लाठी पृथिवी पर फेंकदे। निदान मूसा ने खुदा की आज्ञानुसार अपना डण्डा पृथिवी पर दे मारा, फिर वह 'फैज़ा हिया सोबानुन मुबीन" देखते के देखते ही एक भारी अजगर बनगया और "फैज़ा हिया तलक़ फ़ौमा या फ़िकून" जादूगरों के डंडों और रस्सों से बनाये हुये सब सांपों को खागया। भाष्यकारों ने तो यहां तक गप्प हांकी है कि यह सब डंडे और रस्से ४० गदहों पर लाद कर तमाशा घर में लाये गये थे, और कई सौ मन तोल में थे। मूसा की

लाठी ने कई सौ मन लाठियों को खाकर डकार तक भी न ली और जुगाली तक भी न की। कहा गया है कि चारों ओर देखने वाले जो एकत्रित थे वे इस अद्भुत अजगर को देख कर ऐसे अन्धाधुन्ध भागे कि इस गड़बड़ में २५००० मनुष्य पावों के तले रौंदे जाकर मारे गये। मूसा ने जब देखा कि यह तो बड़ा अन्याय हुआ, इतनी ईश्वर की प्रजा यों ही मारी गई, तो उन्होंने तुरन्त सांप को पकड़ लिया और वह वैसे की वैसे ही लाठी बनगई। आश्चर्य का स्थान है कि उस लाठी की तोल कई सौ मन रस्से और डंडे खा कर भी उतनी ही रही जितनी कि पहले थी और उसका पेट तनिक भी बड़ा न हुआ और न कहीं वह खुराक दृष्टि पड़ी। सच है मोजज़ा (अद्भुत क्रिया) हो तो ऐसा ही हो, और उसको मानने वाले भी हों तो कुरानवाले ही हों ! जो पहिले सृष्टि नियम और बुद्धि को पागलखाने के दारोगा के हाथ बन्धक करदें। एक उन्निसवीं शताब्दी के रिफ़ा-मेंर मुसलमान ने कुरान की ऐसी मिथ्या बातों पर क़लई तो चढ़ाई, परन्तु वृथा मुलम्मा करने से यथार्थ को नहीं छिपा सकते। ईश्वर करे मेरे भाइयों की आंखें खुलें और इस प्रकार की असत्य बातों को वह देख सकें।

सी० ६ सू० एराफ आ० १७—११७

(४६) कुरान की शिक्षा है कि मूसा ने उपरोक्त लाठी मार कर समुद्र को फाड़ दिया और उसमें बारह रास्ते बन गये। मूसा की सब सेना उनमें होकर चली गई और जब फ़रऊन की सेना निकलने लगी तो समुद्र मिल गया और वे सब डूब गये और मूसा बनीइसराईल सहित बच निकले। वाह ! क्या विचित्र लाठी थी, जो मूसा के साथ एकान्त में बातें करती थी, रात को पहरा देती थी, दिन को छत्री का काम देती थी और इच्छानुसार छोटी बड़ी होजाती थी ! तभी तो उसने समुद्र को फाड़ दिया, परन्तु ज्ञात नहीं कि

महात्मा मूसा के मरने के पश्चात् वह लाठी कहां चली गई। निःसन्देह ऐसा पदार्थ अजायब घर में रक्खा जाना चाहिये शोक है ! ऐसी इलहामी गप्पों पर।

सी० १६ सू० शुअरा आ. ६३-६६

(५०) कुरान की शिक्षा है कि हज़रत मूसा ने डंडा मारकर पत्थर मेंसे बारह स्रोत निकाल दिये बनीइसराईल ने अच्छे प्रकार तृप्त होकर पानी पिया। बुद्धिमान् भाष्यकार महाशय तो इस गप्प को यहां तक हांकते हैं कि जब महात्मा मूसा यथन नामिक नगर विशेष में पधारे तो मार्ग में उनको एक छोटासा पत्थर मिला, उसने हज़रत मूसा से बार्तालाप किया और कहा कि मुझे उठाले। मैं किसी कठिन समय में काम आऊंगा। निदान महात्मा मूसा ने वह पत्थर उठा कर अपने तोबड़े में डाल लिया। जब बनीइसराईल ने पानी मांगा तो खुदा ने कहा कि वह पत्थर जो तेरे तोबड़े में है उसको निकाल और लाठी से मार, उसमें से बारह स्रोत निकल आवेंगे निदान ऐसाही हुआ। पुराण ने तो शिवजी के शिर में से गंगा बहादी, परन्तु कुरान ने अपने बड़े भाई से तनिक आगे पग बढ़ाया और पत्थर में से बारह धारा निकालदीं। शोक है संसार की अविद्या पर।

सी० १ सू० बकर आ० ५६।

(५१) कुरान की शिक्षा है कि जब बनीइसराईल सत मार्ग विहित होगये और खुदा की बातों को भूल गये तो खुदा ने पहाड़ उठा लिया और उनसे कहा कि या तो मेरी बातों को मानलो नहीं तो अभी पहाड़ तुम्हारे शिर पर गिरता है। बड़े आश्चर्य की बात है, कि खुदा ने पहाड़ उठाने का कष्ट सहा! यह सम्भव ज्ञान पड़ता है कि पहाड़ उठाने की कहानी या तो कुरान से पुराण में आई अथवा पुराण से कुरान में गई, क्योंकि महाराजा श्रीकृष्ण का उँगली पर

पहाड़ उठाना भी कुछ अभिप्राय रखता है, हाय अविद्या और अन्धकार।

सी० १ सू० बकर आ० ६२।

(५२) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा सुलेमान एक दिन मैदान में से जा रहे थे, वहां की चींटियों ने जब उनकी सेना को आते देखा तो उनमें से एक चींटी बोली कि भाइयो ! अपने बिलों में घुस जाओ। ऐसा न हो सुलेमान और उसकी सेना तुमको पांव के नीचे कुचल डाले। सुलेमान इस बात को सुनकर बहुत हँसा और उसने ईश्वर का धन्यवाद किया कि च्यूंटियों की बातचीत भी सुन सके थे। महाशयो डारविन जैसे मनुष्यों ने मक्खियों और च्यूंटियों के पीछे आयु व्यतीत करदी, पर उनकी भाषा को न समझ सके। शोक है ऐसी गढ़न्त पर ! तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकारों ने तो यहां तक बात बढ़ाई है कि इस च्यूँटी का शरीर भेड़ के समान था, और उसका नाम मन्दजा था' और सुलेमान ने उसका शब्द तीन कोस के अन्तर से सुन लिया। बात चीत करते समय सुलेमान ने बीबी च्यूंटी से पूछा कि तेरी सेना कितनी है। च्यूँटी बोली कि मेरे पास चार सहस्र योद्धा और प्रत्येक योद्धा के आधीन चालीस चालीस सहस्र प्रधान और प्रत्येक प्रधान के आधीन चालीस सहस्र च्यूँटियां हैं। सारांश यह कि सुलेमान और बीबी च्यूँटी का बड़ा आश्चर्य जनक सम्भाषण है जो बच्चों को बहलाने के लिये मनोरंजक है। शोक है ! भाष्यकारों की बुद्धि पर कि च्यूँटियों की कहानियों को ईश्वर की ओर से कहकर ईश्वरीय ज्ञान का नाम बदनाम करते हैं। ईश्वर ! तू प्रकाश भेज और भाइयों को सीधा स्वर्ग दिखा।

सी. १९ सू० नमल आ० १७-१९

(५३) कुरान की शिक्षा है कि हज़रत सुलेमान जन्तुओं की भाषा जानते थे। जैसे हुदहुद वा चक्की राहे पक्षी की

जो कुरान में कहानी है वह विचित्र है। हुदहुद की सुलेमान के साथ बात चीत, चक्की राहे का रानी की ओर से पत्र लेजाना और वहां से उत्तर लाना रानी का सुलेमान के समीप आना इत्यादि एक मनोरंजन कहानी और ईश्वरीय ज्ञान की कहानी है। कदाचित इसी कारण से लोग हुदहुद को सुलेमान का पुत्र कहते हैं। परन्तु क्यां आज कल वह अपनी सुलेमानी भाषा भूल गया है। शोक है! ऐसी गप्पों के लिये जबरगाईल के पंख थकाये जावें। और जो लोग इनको ईश्वर की ओर से न समझें उनको काफ़िर कहा जावे। आश्चर्य की बात है कि अविद्या के समय में तो लोग मन गढ़न्त बातों पर विश्वास करलेते थे, परन्तु आज कल सभ्य शिक्षित बी० ए० और एम० ए० की डिगरी प्राप्त स्कूलों और कालिजों में चौदह पन्द्रह वर्ष तक विद्या प्राप्त बुद्धिमान् मुसलमान भी बहुधा इनका आखेट बन रहे हैं।

मी० १० सू० नमल आ० १६-२२

(५४) कुरान की शिक्षा है कि वायु सुलेमान की आज्ञा से चलता था और उनके सिंहासन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा देता था। सम्भव है कि कोई कुरानी इस स्थान से यह सिद्ध करने की चेष्टा करे कि देखिये महाशय! कुरान तो साइन्स का घर है। यूरोप वासियोंने तो अब बेलून यन्त्र बनाया है, परन्तु कुरान में उसका वर्णन पहिले ही से था। सुलेमान बेलून पर चढ़ा करते थे। सम्भव है कि कुरान में से रेल और तार भी निकल आवें! परन्तु सुलेमान का वायु को आज्ञानुकूल चलाना अत्यन्त ही आश्चर्य की बात है। वायु किस प्रकार उनकी आज्ञा को सुनता होगा! इसी बात को लेकर कदाचित् एक परिहासक ने वायु और मच्छरों का अभियोग सुलेमान के न्यायालय में आना बतलाया है।

सी० २३ सू० सद आ० ३६

(५५) कुरान की शिक्षा है कि खुदा की वही (स्वर्गीय आज्ञा) केवल पैग़म्बरों के पास ही नहीं आई किन्तु वह मधु मक्खियों के पास भी आई। निदान मक्खियों का मधु एकत्रित करना और घर बनाना इसी वही के अनुसार है कि जिस वही के अनुसार कुरान है। इस के अनुसार तो फिर पक्षियों, अबाबीलों, कौवों, कबूतरों के घोंसले भी खुदा की वही के द्वारा ही बनते हैं परन्तु जबराईल किस किस के पास पहुंचाता होगा। राज और अन्य शिल्पकार भी तो फिर खुदा की वही के अनुसार ही सब काम करते होंगे। परन्तु जबराईल का आकार वे क्यों नहीं देख सकते और क्यों नहीं वे इलहाम का दम भरते ? इस लिये कि वे बुद्धिमान् हैं।

सी० १४ सु० नहल आ० ६८-६९

(५६) कुरान की शिक्षा है कि अबाबीलों ने कंकरियें मारकर हाथियों और मनुष्यों का खलयान कर दिया और सब सेना को नष्ट कर दिया। निःसन्देह यदि यह गप्प कुछ भी बढ़कर न हो तो वह मोज़जा नहीं समझी जासकी। कहां हाथी और कहां अबाबील एक कीड़े खाने वाला पक्षी ! भाष्यकार महाशयों ने अपनी तीक्ष्णबुद्धि से अच्छा काम लिया है। कहते हैं कि एक एक अबाबील तीन तीन कंकड़ियां लिये हुए था दो दोनों पंजो में और एक मुंह में। प्रत्येक कंकड़ी पर मारे जाने वाले का नाम लिखा हुआ था। उसी के वह लगती थी, दूसरे के नहीं, यहां तक कि जो मनुष्य रणभूमि से भाग गये थे उनके नाम की कंकड़ी उनके पीछे गई और जहां वे ठहरे वहां जाकर शिर पर लगी और नष्ट कर दिये। शोक ! अविद्या के समय के उगे हुए वृक्ष अब तक हरे हैं ! !

सी० ३० सू० फील आ० १-५

(५७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने नास्तिकों को आस्तिक बनाने के लिये एक विशेष ऊटनी उत्पन्न की।

मूर्ख लोग तो यहां तक गप्प हांकते हैं कि वह ऊटनी एक पत्थर में से उत्पन्न हुई और उत्पन्न होने के साथ ही उसने बच्चा भी दे दिया। फिर काफ़िरों ने उस ऊंटनी को मार डाला और उन पर दुःख पड़ा। भाष्यकार लिखते हैं कि उस ऊंटनी का बच्चा डर कर पहाड़ की ओर भाग गया और वहां तीन वार चिल्लाया और फिर आकाश की ओर उड़ गया। निदान प्रलय के दिन यह ऊंटनी बच्चे सहित बहिश्त में चरे फिरेगी। शोक है ऐसी मूर्खता पर और ऐसी गप्पों पर?

सी० १५ सू० इस्राईल आ० ५६

(५८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने बनीइसराईल को उनके दुराचार के कारण बिजली द्वारा नष्ट कर दिया। भाष्यकार कहते हैं कि महात्मा मूसा इस बात को देख कर रो पड़े कि लोग मुझे क्या कहेंगे इस लिये खुदा ने उन सब को फिर जीवित कर दिया। विदित होता है कि यह किसी दूसरी बातों की भांति योंही गप्प हांक दी है नहीं तो बिजली के साथ नष्ट हो जाना और फिर जीवित हो जाना क्या अर्थ रखता है?

सी० १ सू० बकर आ० ५४-५५

(५६) कुरान की शिक्षा है कि जब बनीइसराईल मिश्र देश से निकल कर भूखों मरने लगा तो खुदा ने उनके लिये मन (हलवा विशेष) और सलवा (बटेर की भांति का पक्षी) आकाश से भेजे। भाष्यकार कहते हैं कि सलवा एक प्रकार का पक्षी होता था जो घास पर आकर बैठता और चहचहाने के पश्चात् स्वयं ही भुनकर नीचे गिर पड़ता था उसमें न नस होती, न रुधिर, न हड्डी। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकार से कोई पूँछे कि पक्षी स्वयं भुनकर किस प्रकार गिर पड़ा करता था और यदि उनमें नस, रुधिर, हड्डी आदि नहीं थी तो वे उड़ने वाले पक्षी कैसे होगये! यह सब बच्चों को

बहलाने के लिये कहानियां हैं जिनको मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकता ?

सी० १ सू० बकर आ० ५६

(६०) कुरान की शिक्षा है कि बनीइसराईल को धूप ने सताया तो खुदा ने उस पर बादल भेज दिया और वह छप्पर का काम देने लगा। कुछ लोग यहां तक अनर्थ करते हैं कि वह बादल बनीइसराईल के साथ २ शिरों पर चला करता था और छांह रखता था। मैं इसको स्वीकार नहीं करसक्ता ?

सी० १ सू० बकर आ० ५६

(६१) कुरान की शिक्षा है कि बनीइसराईल को कहा गया कि गाय को बध करो लोग बड़े चकराये मूसा से कहने लगे कि तुम हमारे साथ ठठोल करते हो। उनके चकराने का यह कारण सा था कि उनमेंसे एक मनुष्य को किसी ने मार डाला। मृतक को मारने वाला नहीं मिलता था। इस लिये खुदा ने आज्ञा दी कि गाय बध करके उसका एक टुकड़ा मृतक के मारो मृतक जीवित होजायगा और स्वयं अपने मारने वाले का नाम बता देगा। निदान खुदा के साथ बहुत से तर्क वितर्क के पश्चात् गाय के रङ्ग आयु परिमाण आदि का निर्णय हुआ और गाय बध की गई। भाष्यकार महाशय इस बात को पुष्ट करने के लिये लिखते हैं कि गाय की पूंछ लेकर मृतक के मारी गई। तत्क्षण जीवित होगया और मारने वालों के नाम बताकर तुरन्त ही मर गया ! देखिये गाय की पूंछ से मृतक को जीवित करने की सामर्थ्य है ! इस लिये यदि कुछ पौराणिक हिन्दू गाय की पूंछ पकड़ कर मुक्ति पा लेना मानलें तो क्या आश्चर्य है। शोक है कि कुरान जैसा उम्मुलकिताब (किताब की माता; अर्थात् मूल) ईश्वरीय होने के स्थान में इस प्रकार की गप्पों से उम्मुलगप्पात (अर्थात् गप्पों की माता वा मूल) बन रही है।

सी० १ सू० बकर आ० ६६—७२

(६२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने फरऊन के लोगों पर टिड्डी मेंडक चीचड़ी आदि का दुःख उतारा और फरऊनियों के घरों का तूफान (रौ) में डबोदिया। भाष्यकार लिखते हैं कि फरऊन के घरों में तो पानी भरगया, परन्तु इसराईलियों के घर नीचे होनेपर भी सूखे रहे और फिर खुदाने नील नदी का सब पानी लोहू कर दिया। जब फरऊनी लोग पीते, तब तो लोहू होजाता और जब इसराईली पीते तब वैसे का वैसा ही पानी रहता। मैं पूछता हूं कि ऐसी मिथ्या बातों की क्या आवश्यक्ता थी? सच है हबशियों के हाथ में गोरा मनुष्य जा फंसा, उन्होंने देखा कि यह तो हम से सर्वथा विलक्षण है, मुंह पर स्याही मलकर अपने जैसा कर लिया! शोक है! भाष्यकारों की बुद्धि पर और आश्चर्य है, ऐसे इलहामों पर कि जिन को मैं स्वीकार करने में असमर्थ हूं।

सी. ६ स. एराफ आ. ३-१२.

(६३) कुरान की शिक्षा है कि जब मूसा कोह तूर पर खुदा से बातें करने में निमग्न थे तो बनी इस्राईल ने एक बछड़े की पूजा आरम्भ करदी, जो सोने चांदी के गहनों को ढालकर बनाया गया था और वह गाय की भांति बोला करता था. आश्चर्य है कि धातु से बना हुआ बछड़ा गाय की नाईं बोले। परन्तु उपस्थित गण कुछ तो स्वयं खुदा ने और कुछ भाष्यकारों ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जब बनी इसराईल नील नदी को पार कर रहे थे तो महात्मा जबराईल घोड़े पर सवार होकर उसके आगेआगे चलते थे। एक मनुष्य सामरी नामी ने जबराईल को देख लिया और उनके घोड़े के सुम के नीचे की धूल से एक मुट्ठी भरली। जब उसने मूसा की अनुपस्थिति में सोने चांदी को ढालकर बछड़ा बना लिया तो उसके मुंह में वह मुट्टी डालदी। वह उसी समय बोलने लगा और उसका शब्द सुनते ही बनी इसराईल उसके सम्मुख सिजदे में गिर पड़े। ज्ञात होता है

कि पूर्वकाल में गाय की पूजा पृथिवी भर पर थी। किन्तु खुदा के कलाम में धातु के बछड़े का जीवित होना और बोलना चलना केवल गप्प है। कि जिसको मैं कदापि नहीं मान सकता।

मं० १६ सू० तो आ० ८८-६८

(६४) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने इबराहीम से कहा कि अपना बेटा मेरे नाम पर बलिदान कर, निदान वह बलिदान करने लगे, पर, छुरी ने काट न किया और खुदा ने एक दुम्बा जबराईल के हाथ बहिश्त से भेज दिया और कहा कि हे इबराहीम तू बड़ा शूर है। ले इस मेंढ़े को, अपने पुत्र के बदले बलिदान कर भाष्यकारों ने इसको और बढ़ाकर यह लिखा है कि इसमाईल की ग्रीवा तांबे की बन गयी, इस कारण छुरी ने काट न किया कोई २ कहते हैं कि कट जाती थी और पुनः मिलजाती थी अब दुम्बा जो बहिश्त से लाया गया था जो एक समय आदम के पुत्र हाबील ने खुदा के नाम पर बलिदान किया था। वह इस कारण कि बहिश्त में था, अब दुबारा बलिदान किया गया। उसके बड़े २ सींग थे और चालीस वर्ष पर्यन्त बहिश्त की अंगूरो चरता रहा था। मैं इन मिथ्या बातों को नहीं मानता।

सी. २३ सू. जकात आ. १०२-१०७

(६५) कुरान की शिक्षा है कि खुदा के पैगम्बर इबराहीम को अग्नि में डाल दिया गया अग्नि नितान्त ठण्डी होगई। चारों ओर पुष्प खिल पड़े और पानी के श्रोत बहने लगे। आश्चर्य की बात है कि लटीमर और करनीमर जैसे ईश्वर भक्त आग में फेंके गये और वह ठण्डी न हुई। क्या खुदा को स्मरण न रहा था! और खुदा का इबराहीम से विशेष प्रेम था, और वहां आग के फूल बना दिये और यहां ठण्डी तक न की ? यह सब मूर्खों को विश्वासी बनाने की

बातें हैं । यदि कुरान का खुदा कोई ऐसी लीला दिखा सकता है तो चाहिये कि आज कल किसी मुसलमान को जो ईश्वर प्राप्त मनुष्य और पैग़म्बर होकर खुदा के साथ ईसा अथवा मूसा की नाईं बातें करने का दम भरता हो, एक लम्बी चौड़ी भट्टी को आग से भर कर, बीच में फेंक दिया जावे । यदि आग पुष्प बन जावे तो समझें कि कुरानी मोजज़े सब सत्य हैं ? बहुधा मूर्ख लोग तो इस मोजज़े के यहां तक विश्वासी हैं कि वह आयत "कुलना या नारो कूनी व रदन व सलामन् अला इबराहीम" को पीपल के पत्तों पर लिख कर ज्वर के रोगी को धोकर पिलाते हैं और विश्वास रखते हैं कि इस से बुखार उतर जाता है । शोक है इस मूर्खता पर ।

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ६६

(६६) कुरान की शिक्षा है कि मूसा एक ईश्वर भक्त से मिलने गया । पता यह कि जहां भुनी हुई मछली जीवित होकर पानी में चली जावे, वहां पर ही वह मनुष्य मिलेगा । बड़ा कष्ट उठाकर मूसा एक स्थान में पहुँचे । जहां मछली जीवित होकर पानी में चली गई और इस ईश्वर भक्त से बातें की । मैं पूछता हूँ कि भुनी हुई मछली क्योंकर जीवित रही हो विश्वास रहित गप्पों का नाम ही मोजज़ा होता है । मैं इस शिक्षा को नहीं मान सकता ।

सी. १६ सू. कहफ़ आ. ६२ ६४

(६७) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा ईसा मिट्टी के खिलौने बनाकर उन में आत्मा डाल देता था और अपने मित्रों के सम्मुख ही उनको उड़ा दिया करता था । यह उस का मोजज़ा था । कुरानी तो यह मान सकते हैं क्योंकि महात्मा ईसा उनके विचारानुसार बिना पिता के उत्पन्न हुए थे, इसलिये वह पशुओं को भी बिना मा बाप के उत्पन्न कर

सकते थे, परन्तु मैं इतनी बड़ी गप्पों और सृष्टि नियम विरुद्ध बातों को कदापि नहीं मान सकता।

सी० ३ सू० उमरान् आ० ४८।

(६८) कुरान की शिक्षा है कि महात्मा ईसा मुर्दों को जीवित कर देते थे। शोक है जीवित करने का नुसखा कदाचित भूल से कुरान में न लिखा जा सका, नहीं तो मुर्दों पर आज कल भी परीक्षा करके देख लिया जाता। भाष्यकारों ने जो इस पर बुद्धि को दूर रख कर लिखा है, वह विचित्र लिखा है। फिर एक मौलवी साहब कहते हैं कि कुरान की शिक्षा सृष्टि नियमानुकूल और सच्ची है। भाई यदि सृष्टि नियमानुकूल होती तो मैं उसको क्यों त्यागता यहां तो पुराणों से भी बढ़ कर लीला उपस्थित है।

सी० ३ सू० उमरान आ० ४८

(६९) कुरान की शिक्षा है कि यहूदियों ने न तो महात्मा ईसा को मारा न फांसी ही दी, किन्तु उन लोगों को भ्रम होगया। इस भ्रम को भाष्यकारों ने यों सिद्ध किया है कि महात्मा ईसा को खुदा ने आकाश पर बुला लिया, और उसके स्थान में उस के एक शत्रु का आकार जो ईसा के मारने पर उतारू था, ईसा के सदृश बना दिया। लोगों ने उसे मार डाला। और महात्मा ईसा साहब आकाश पर भाग गये। न जाने आकाश पर किस प्रकार उड़गये! और चालीस पचास मील ऊपर जाकर वह स्वास कैसे लेते रहे! यह बाइबिल की नक़ल की गयी है। और इसी के अनुकरण में उन्होंने पैग़म्बर को भी बुराक़ पर चढ़ा कर सातों आकाशों की सैर करादी है, और आदम ईसा मूसा इबराहीम की खुदा से बातें करादी हैं।

सी० ६ सू० निसाम आ० १५-५८

(७०) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने एक मनुष्य को प्रलय का विश्वास दिलाने के लिये मार दिया। और सौवर्ष

पश्चात् जीवित करके पूछा। बता तू कितने वर्ष मृतक रहा। कहा एक दिन से भी न्यून खुदा ने कहा कि नहीं तू सौ वर्ष तक मृतक रहा देख तेरे गधे की हड्डियां अत्यन्त सड़ गई हैं। हम उनको तेरे सम्मुख ही मांस और खाल लगाकर जीवित करते हैं। गधा भी सौ वर्ष का मृतक जीवित हो गया। उत्तमता यह है कि उसका खाना भी सौ वर्ष में कुछ भी न सड़ा और वैसे का वैसा ही तर व ताजा रहा। क्या यह छोटी सी गप्प है? विदित होता है कि उस मनुष्य ने स्वप्न देखा होगा! पर उड़ाने वालों ने अच्छी बेपर की उड़ाई! इलहामी पुस्तक गप्पों का घर है इस कारण मानने योग्य नहीं।

मं. २ सू. बकर आ. २०६

(७१) कुरान की शिक्षा है कि इबराहीम ने खुदा से पूछा। ऐ खुदा! तू कैसे प्रलय के दिन मृतक जीवित करेगा। खुदा ने कहा क्या तुझे इस में कुछ सन्देह है? इबराहीम ने उत्तर दिया कि सन्देह तो नहीं पर मेरे मन को विश्वास नहीं है। खुदा ने कहा अच्छा चार पक्षी लेकर उनके टुकड़े करके चार पहाड़ों पर रख दे और फिर उनको बुला। वह तेरी ओर भागते आयेंगे। तीव्र बुद्धि भाष्यकारों ने उस पर टिप्पणी चढ़ाकर भली भांति प्रकाशित किया है लिखते हैं कि महात्मा इबराहीम ने एक कव्वा एक कबूतर एक फ़ाख्ता (पिण्डुख) और एक मैना चार पक्षी लिये चारों के शिर काट कर तो अपने पास रख लिये और धड़ों को ओखली में मिला कर कूट चूर २ कर दिये और उस चूरे का थोड़ा २ सा भाग पर्वतों पर रख दिया, फिर बोलने लगा "ए कव्वे आ, ए कबूतर चला आ, ए फाख्ता (पण्डुख) उड़कर आजा, ए मैना चल और तुम अपने २ शिरों के साथ आलगो" निदान ऐसाही हुआ। महात्मा इबराहीम को तो इस विचित्र लीला से निश्वास आगया। पर मेरा कुरान पर से ईमान

टूट गया। शोक ! मैं ऐसी निरर्थक बातों को स्वीकार नहीं कर सका।

सी० २ सू० बकर आ० २६०

(७२) कुरान की शिक्षा है कि सप्ताह वाले दिन मछली पकड़ने वालों को खुदा ने सुअर और बन्दर बना दिया। पूछना चाहिये कि मनुष्यों के सुअर और बन्दर कैसे बनगये क्या उनके पूँछ भी निकल आई थीं। अथवा बिना पूँछ के बन्दर और सुअर बने थे। ये सब व्यर्थ गप्पें हैं जिनको बुद्धिमान् कदापि मान नहीं सकते। ईश्वर करे कि मुसलमानों को इन बातों का यथार्थ पता लगे ! परन्तु मुझे डर है कि जब उनको ये बातें मिथ्या जान पड़ेंगी तो इन पर नया जामा चढ़ाने की चेष्टा करेंगे। कुछ लोगों ने ऐसी चेष्टा की भी है, और कुछ कर रहे हैं। जब उन्होंने देखा कि महात्मा कुरान वह चले तो व्यर्थ टिप्पणीं और रँग चढ़ाना आरम्भ किया कि किसी प्रकार यह कठपुतली की दृश्य (तमाशा) बना रहे। मैं इनसे पूछता हूं कि यदि एक बात प्रत्यक्ष झूंठ और बुद्धि विरुद्ध है तो उसको क्यों न मरी हुई मक्खी की भांति निकालकर फेंक दिया जावे। क्यों झूठमूट उलटे पुलटे प्रमाण देकर ईश्वर की शक्ति को बदनाम किया जावे और गधे और ऊंट बनाने के लिये मन्तक (तर्क) छांटी जावे।

सी० ६ सू० एराफ आ० १६६

(७३) कुरान की शिक्षा है कि कुछ फीट लम्बी चौड़ी नौका में नूह ने पृथिवी भर के सब पशु पक्षी इत्यादि का एक २ जोड़ा उनके खाद्य द्रव्य सहित रख लिया और शेष सब प्राणी नष्ट होगये ! यह कितनी बड़ी गप्प, वरन् गप्प का भाई गपोड़ा है। हाथी गेंडा, सिंह, भेड़िये, सुअर, बन्दर, गाय, भैंस, ऊंट, आदि लाखों बड़े २ जन्तुओं को एक छोटी सी नौका में रखलेना कौन मानले ? भला क्या महात्मा नूह पृथिवी भरके सब पशु पक्षी कीड़े मकोड़े सर्पादि रेंगने वाले

जीवों के नाम और जाति जानते थे, जो क्रमानुसार नौका में बिठाते गये। यदि नूह की कोई ऐसी पुस्तक है जिसमें वह यह नाम छोड़ गये हों मिलजावे तो नेचरिस्ट को एक बहु-मूल्य उत्तम पदार्थ हाथ लगजावे। पर शोक है इन बातों का कहीं शिर पैर नहीं है विचार का स्थान है कि, कुरान और पुराण एक समान होने के अतिरिक्त मिथ्या कहानियों से कैसे भरे हुए हैं! सच पूछो तो ये दोनों सगे भाई हैं। दोनों ही मूर्खता के राज्य में उत्पन्न हुये! मूर्ख लोग कहानियों में उलझ रहे हैं और बहुधा मिथ्या विचार में फंसे हैं। ईश्वर इन सब पर अपनी दया करे।

सी० १८ सू० मोमिनून आ० २७

(७४) कुरान की शिक्षा है कि, यदि एक स्त्री किसी पुरुष का मुख तक भी न देखे तो भी उसके पुत्र उत्पन्न हो सकता है, इस बात का प्रमाण हजरत ईसा और मरियम के वृत्तान्त से मिलता है जो कुरान में कई स्थानों में आया है। कुरान वाले हजरत ईसा को यूसुफ़ बढ़ई का बेटा नहीं मानते, जैसा कि वह है। उलटा उसे बिना पिता के उत्पन्न हुआ मानते हैं। इस बात से खृष्टिनियम पर धब्बा और मरियम पर दोष लगता है। और यह बात मोजजे के स्थान में एक अश्लील बात हो जाती है। मेरी बुद्धि और सभ्यता आज्ञा नहीं देती कि मैं हजरत ईसा को उन बच्चों के साथ मिलाऊँ जो आज कल अज्ञात पिता से उत्पन्न हुये समझे जाते हैं। कुरान की ऐसी शिक्षा से ही मेरा मन खट्टा हुआ। ईश्वर करें मेरे भाइयों को उपदेश प्राप्त हो और इन मिथ्या बातों से छुटकारा पासकें।

सी० १६ सू० मरयम आ० १६-३५

(७५) कुरान की शिक्षा है कि जब लूत के अनुगामियों ने हजरत लूत का उपदेश न माना तो खुदा को बड़ा क्रोध

आया और इसी क्रोध में आकर उन सब नगरों को उठाकर उल्टा करके फेंक दिया और फिर ऊपर से पत्थरों का मेंह बर्षा दिया। तीक्ष्ण बुद्धि भाष्यकार इस बात को और भी बढ़ाकर कहते हैं, और लिखते हैं कि खुदा ने आप तो नगरों को नहीं उल्टा था, किन्तु उसने जबराईल को आज्ञादी कि वह अपने पंख नगरों के नीचे रख कर गृह आदि को पंखों पर उठाले, निदान जबराईल अनेक नगरों को पंखों पर उठा कर आकाश की ओर उड़गया और इतना ऊंचा चला गया कि आकाश वालों ने भी उन नगरों के गधों और कुत्तों और मुरगों का शब्द सुन लिया फिर जबराईल ने ऊपर से उल्टा करके नीचे फेंक दिया और वह सब नष्ट होगये। शोक है! मूर्खता पर।

सी० १२ सू० हूद आ०

(७६) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने शैब पैग़म्बर के अनुयायिओं को घोर शब्द करके ही नष्ट कर दिया। और इसी प्रकार सोलह पैग़म्बर के अनुयायियों को नष्ट कर दिया। क्या ये घोर शब्द अब बन्द होगये हैं? ये सब बच्चों को बहलाने की कहानियां हैं कि जिनको यदि पढ़े लिखे मनुष्य सत्य मानलें तो वे भी बच्चेही समझे जायंगे।

सी १२ सू. हूद आ. ६४

(७७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने मुट्ठी भरकर कंकरियां मार कर मुसलमानों की विपक्षी सेना को भगा दिया। महाशयगण! भला क्या ईश्वर भी कंकरियां और रोड़े मारा करता है? रोड़े मारना अज्ञान बालकों का कर्म होता है न कि बुद्धिमानों का और फिर खुदा का! मैं इन बातों को मान नहीं सकता॥

सी. ६ सू. अनफाल आ. १७

(७८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने सहस्रों फ़रिश्ते मुसलमानों की ओर से लड़ने के लिये भेजने की प्रतिज्ञा की

शोक है कि वह आकाशी सहायता अब तक न मिलने के कारण दीन मुसलमान स्पेन व आस्ट्रीया से निकाले गये, यूरोप में उनकी हार हुई, अफ़रीका में पराजित हुये, भारतवर्ष में राज्य खो बैठे पर स्वर्गीय फ़रिश्तों ने उनकी सहायता न की। सम्भव है कि फ़रिश्ते फरंगियों की तोपों के शब्द से डर कर आकाश में ही छिप रहे, हां, अथवा मार्ग भूल गये हों भला ऐसी मिथ्या बातें क्या मानने योग्य हैं!

सी० ६ सू० अनफाल आ० १७

(७६) कुरान की शिक्षा है कि जुलक़रनैन ने पश्चिम में जाकर देखा कि सूर्य एक दलदल अर्थात् कीचड़ में अस्त होता है। क्या खूब! पर जुलक़रनैनी दलदल का जहाज़ चलाने वालों को अब तक पता नहीं मिला। अमरीका मिल गया, आस्ट्रेलिया मिलगया, अनेक अन्य द्वीप भी मिल गये, पर जुलक़रनैनी दलदल न मिली, क्या शुष्क होगई है या आकाश पर चढ़ गई है! महाशयो! एक साधारण भूगोलवित् भी इस बात को नहीं मान सकता तो मैं कैसे मान सकता हूं।

सी० १६ सू० कह्फ आ० ८६

(८०) कुरान की शिक्षा है कि जुलक़रनैन ने याजूज माजूज को लोहे की भीत और समुद्र के बीच में बन्दी कर दिया और ये अद्भुत मनुष्य प्रलय के दिन वहां से निकलेंगे। शोक की बात है कि यूरोप वालों ने चप्पा २ पृथिवी खोज डाली और पृथिवी भर की जनसंख्या जानली पर याजूज माजूज उनको कहीं न मिले, अर्थात् लोगों ने यह कहदेना आरम्भ किया कि दीवार चीन सद सिकन्दरी (अर्थात् सिकन्दर बादशाह की बनाई भीत शत्रुओं के रोकने के लिये) है और मङ्गोलिया वाले याजूज हैं। भाष्यकारों ने तीक्ष्ण बुद्धि से भला काम लिया, लिखते हैं कि याजूज माजूज का परिणाम एक बालिश्त से लेकर एक सौ बीस गज तक

लम्बा है । उनके कान इतने बड़े हैं कि रात को सोते समय एक कान को तो नीचे बिछा लेते हैं और दूसरे कान को चादर की भांति ओढ़ लेते हैं। शोक है ऐसी तीक्ष्ण बुद्धि पर और शोक है ऐसी इलहामी गप्पों पर ! न जाने मुसलमान महाशय कब कुरानी कहानियों को छोड़ेंगे ! पुराण की बखिया तो स्वामी दयानन्द जी ने उधेड़ा और लोगों को प्रकाश दिखाया परन्तु कुरान की बखिया न जाने कौन उधेड़ेगा और मुसलमान कब प्रकाश देखने के योग्य होंगे । ईश्वर करे यह शीघ्र हो ।

सी० १६ सू० कहफ आ० ६४

(८१) कुरानकी शिक्षा है कि खुदा ने आकाश को बिन खम्भों के चौकी पहरों सहित उत्पन्न किया और जब कोई शैतान चुप चाप ऊपर जाकर फ़रिस्तों की बात चीत सुनने लगता है तो उसके नक्षत्र तोड़ कर मारे जाते हैं और शैतान इस अग्निवर्षा से डर कर भाग आता है । निस्संदेह यदि शैतान अपनी शैतानी से न फिरे तो एक दिन आकाश नक्षत्रों से रहित हो जायगा और फिर चन्द्रमा और सूर्य तोड़ कर मारने पड़ेंगे । फिर किसी दिन सातों के सातों आकाश ही शैतान के शिर पर मारने पड़ेंगे । एक तीव्र बुद्धि भाष्यकार ने गप्पों की गप्प हांकते हुये लिखा है कि प्रथम आकाश इद् लहर का और द्वितीय संगमरमर का तृतीय लोहे का चतुर्थ शीशे का पञ्चम चांदी का षष्ठ सुवर्ण का सप्तम लालमणि का है। अत्यन्त शोक है इन पूर्ण मूर्खों पर !, भला यदि कोई मुसलमान विद्यार्थी भूगोल और एस्ट्रनोमी (ज्योतिष) पढ़ कर कुरान से विमुख न होजाय तो वह और किस कूप में गिरे ।

सी० २३ सू० साफात आ० ७-१०

(८२) कुरान की शिक्षा है कि रोजे के दिनों में उस समय तक खाना उचित है जब तक प्रातःकाल की सफ़ेदी

इतनी न होजाय कि श्वेत धागे को काले धागे से भेदकर सकें। उस के पश्चात् दिन भर मुंह वन्द रखना उचित है। आधीरात को उठकर खाना कितना सृष्टि नियम विरुद्ध है। पशु पक्षी, कीट पतङ्गादि भी बहुधा रात्रि को विश्राम करते हैं। परंतु रोजेदार को पेट की पड़ी हुई होती है। अरब में तो यह कानून चल गया। परन्तु खुदा को यह न सूझा कि पृथिवी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के रहनेवाले कैसे रोजा रक्खा करेंगे? क्या ६ मास पर्यन्त दिनको भूखा मरना पड़ेगा! कितनी अधूरी शिक्षा है। महाशयगण! उपरोक्त आक्षेप योग्य बातों को रद्दी के टोकरे में डालकर तनिक एक पग और आगे चलिये।

सी० २ सू० बकर आ० १८७

(८३) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने आकाश को हाथों के वल से बनाया और खुदा को तनिक भी थकावट न हुई। मैं पूछता हूँ, कि हाथों से आकाश बनाने की क्या आवश्यकता थी? "कुन्" का शब्द कह देना ही काफ़ी था, आकाश वनगया होता। यह माना जा सकता है कि रब्ब-उल-कुरान बड़ा शक्तिमान और बली है, इस लिये हाथ के साथ काम करके साधारण मज़दूरों की भांति उसको कुछ थकावट न हुई किन्तु वह कुन् का शब्द क्यों भूलगया। कदाचित् हाथ का वल दिखाने के लिये। शोक है! इस शिक्षा पर।

सी० २७ सू० ज़ारयात आ० ४७

(८४) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने पृथिवी पर पहाड़ इस कारण रक्खे हैं कि वह मनुष्यों के भार से हिल न जावे। शोक है! कि फिर भी पृथ्वी की सरदर्दी दूर न हुई और वरावर घूम रही है और बहुधा मारे कष्ट के कांप उठती है। कहां आज कल का प्रकाश और कहां कुरान की शिक्षा, भला दोनों का क्या मेल होसकता है?

सी० १७ सू० अम्बिया आ० ३-१३

(८५) कुरान की शिक्षा है कि खुदा आकाश और पृथ्वी को थाम रहा है। ऐसा न हो कि अपने अपने स्थान से इधर उधर हटजाय। शोक ! कुरानी खुदा की शक्ति कितनी अल्प है कि पृथ्वी को बना कर उसको थामना पड़ा। कदाचित इसी लिये कुरान में कहा है कि "लाताखुजहोसन्तिवला नौम्" अर्थात् खुदा को न तो कभी नींद आती है और न ऊँघ ही। भला बखेड़े डालकर खुदा को नींद कहां नसीब। तनिक ऊँघ पड़े तो पृथिवी हाथ से गिरपड़े अथवा आकाश छूट जाय और सब कुछ किया कराया मट्टी में मिल जावे। कुछ भाष्यकारों ने यों लिखा है जब यहूदी आदि लोगों ने कहा कि ईसा खुदा का बेटा है तो पृथिवी और आकाश इस कुफ्रके शब्द को समझ सुनकर फटने को ही थे कि खुदा ने उनको पकड़ लिया और फटने से रोका। शोक है ! ऐसे प्रकाश पर हे ईश्वर ! तू मेरे भाइयों को वह प्रकाश प्रदान कर जो मुझ को प्राप्त हुआ है।

सी. २२ सू० फ़ातिर आ० ४१

(८६) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने नाना प्रकार के कार्य पूरा करने के लिये फरिश्ते नियत किये हैं। इन फरिश्तों के पंख होते हैं। कुछ के दो २ और कुछ के तीन ३ और किसी २ के चार ४ और किसी २ के इनसे भी अधिक। भाष्यकारों ने तो जबराईल के छः सौ पंख वर्णन किये हैं, अज्ञानी लोग तो यहां तक वर्णन करते हैं, जबराईल का एक पंख पूर्व में और दूसरा पश्चिम में पहुँचता है और फ़रिश्तों के विषय में अदभुत गढ़न्त बनाये हुये हैं जैसे हारूत मारूत दो फरिश्ते बाबल के कूप में अब तक बन्दी हैं। कदाचित बाबलनगर के खण्डेर खोदते २ ये फ़रिश्ते भी मिल जावें मैं ऐसे विचित्र पंखवाले जीवों का होना नहीं मान सकता।

सी० २२ सू० फ़ातिर आ० १

(८७) कुरान की शिक्षा है कि खुदा दोज़ख से प्रलय के दिन प्रश्न करेगा क्या तू इतने मनुष्य और २ पत्थर खाकर तृप्त होगई वा नहीं ? पेट्टू जहन्नम बोलेगी क्या कुछ और भी शेष है ? अर्थात् यदि कुछ और शेष है तो दीजिये । खुदा उस के इस पेट्टूपन को देखकर चुप होजायगा । और कुछ उत्तर न देगा । निःसन्देह खुदा का उत्तर न देना सभ्यता के सर्वथा विरुद्ध है । भाष्यकारों ने इसका यह उत्तर दिया है कि खुदा अपने दोनों पांव दोज़ख में डाल देगा और जहन्नम् को तृप्त करेगा । शोक ! महाशोक ! ऐसी असभ्यता की शिक्षा पर !

सी० २६ सू० काफ दाल आ० ३०

(८८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा दोजख को मनुष्यों, जिन्नों और पत्थरों से भरेगा । न जाने जिन्न कौन हैं । भूतों और चुड़ैलों की कथा तो सुना करते थे । पर जिन्नों का वृत्तान्त कुरान, सूरत जिन्न और अन्य आयतों में ही पढ़ने में आया है । भला पत्थरों ने क्या पाप किया है, जो उनको दोजख में डाला जावेगा । सम्भव है यह इस कारण हो कि मूर्त्ति पुजकों को वहां मूर्त्ति बनाने के लिये पत्थरों की खोज में इधर उधर न जाना पड़े, किन्तु दोज़ख में से ही पत्थर लेकर मूर्त्ति बनाकर पूजने लगजावें और यह तो कुरान का निश्चित सिद्धान्त है कि सब मूर्त्ति पूजक दोज़ख में डाले जावेंगे । किसी ने सत्य कहा है कि खुदा प्रत्येक पदार्थ के साथ उसके आवश्यक द्रव्य रखता है । क्या ही अच्छा होता यदि वर्तमान समय के प्रकाश के साथ खुदा कुरान को न रखता ।

सी० १ सू० बकर आ० २४

(८९) कुरान की यह शिक्षा है कि खुदा को खूब क़र्ज़े (ऋण) दो, वह दो गुना फेर देगा । शोक है ! कि खुदा सूद को कुरान में हराम में ठहरावे, और स्वयं दो गुने सूद पर

क़र्ज़ ले। भला खुदा को कर्ज़ की क्या आवश्यकता? क्या उसे किसी बेटे बेटी का विवाह करना था। घर बनवाना था कि लोगों से क़र्ज़ लेने की आवश्यकता पड़ी। अच्छा होता यदि कहनेवाला कहता "खुदा के नाम पर मुझे क़र्ज़ दो" जैसा कि आजकल अनेक भिखमंगे बाजारों में कहा करते हैं। "बाबा! खुदा के नाम का टुकड़ा दिला" पर कोई ऐसा अपमान नहीं करता कि "बाबा! खुदा को टुकड़ा दिला" शोक है! ऐसी अपमान जनक और व्यर्थ शिक्षा पर शोक है! मनुष्य पर, कि उसने खुदा को क्या २ बना दिया कि दूकानदारों और साहूकारों को भी मात करदिया।

सी० २७ सू० हदिया आ० १८-११

(६०) कुरान की शिक्षा है कि यदि खुदा चाहता तो सब को एक धर्म में करदेता। परन्तु पूछिये कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया। और ऐसा क्यों नहीं करदेता। क्या धर्म के लिये लोगों का रुधिर वहता हुआ देखना उसको अधिक प्रसन्न करता है। क्या रूम देश वासियों की नाईं है, जो उस स्थान पर बैठकर सिंह और भेड़ियों को मनुष्यों के साथ लड़ते हुए और लोहू लुहान होते हुये देखकर अपनी हिंसकता की तृप्ति करते थे? अथवा क्या वह चाहता है कि धार्मिक युद्ध में भी टेलीमैंग्स वा एलीमैक्स आकर अपना रुधिर वहावें तो उसकी हिंसकता की तृप्ति हो। आश्चर्य है ऐसी शिक्षा पर।

सी. ६ सू. मायदा आ. ५३

(६१) कुरान की शिक्षा है कि खुदा जिस को चाहता है गुमराह (कुमार्गगामी) करता है और जिस को चाहता है राह पर लाता है। भला फिर मनुष्यों को क्यों दोज़ख में डाला जावे! जब कि उन्हों ने जो कुछ किया वह खुदा की इच्छानुसार ही किया खुदा स्वयं ही दोज़ख में जावे। अ-

ज्ञानी लोग इस मिथ्या बात पर तद्‌बीर तकदीर भाग्य और चेष्टा की लंगड़ी शिक्षा का खोल चढ़ाते हैं किन्तु व्यर्थ ?

सी० ६ सू० मायदा आयत आ० ४५

(६२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा मुशरिक के सिवाय अन्य के पाप क्षमा करदेता है। आश्चर्यकी बात है कि एक मूर्ति पूजक कि जिसने कभी मदिरा पान, व्यभिचार, चोरी, ठगी नहीं की और सर्वदा अपने देवता के क्रोध से डरता रहा, दोज़ख में डाला जावे। और दूसरी ओर एक मदिरा पान करने हारा कबाबी व्यभिचारी, चोर और दुष्ट मनुष्य अपने सब पापों को क्षमा करवाकर स्वर्ग का आनन्द भोगे। शोक है ! कि कर्म 'थ्यौरी' को छोड़ कर पश्चात्ताप क्षमा सहायता और मध्यस्थ के निर्मूल और मिथ्या सिद्धान्तों ने बहुधा मनुष्यों को इतना कुमार्गगामी और पापों पर साहसी कर दिया है॥

सी० ५ सू० निसाअ आ० ११६

(६३) कुरान की शिक्षा है कि जब कुरान पढ़ा जाता है तो मुसलमानों और काफिरों के मध्य में खुदा एक परदा डाल देता है। ज़िससे कि काफ़िर कुरान को न सुन सकें और न समझ सकें। यह इस हेतु कि खुदा ने उनके दिलों पर मुहर लगादी है और उनकी आंखों पर पर्दे डाल दिये हैं। भला यदि यही बात थी तो काफ़िरों को धर्म शिक्षा करने के लिये नबी क्यों भेजे और यदि काफिर लोग सत्य-मार्ग पर न आवें तो उन का दोष ही क्या ? महाशयगण ! काफिर उसको कहते हैं कि जो निरर्थक बातों को ईश्वर की ओर से न माने और बुद्धि विरुद्ध और सृष्टि नियम विरुद्ध सिद्धान्तों और मौजिज़ों पर हंसी उड़ावे मैं हंसी तो नहीं उड़ाता हूं परन्तु अपने मुसलमान भाइयों के लिये बुद्धि और ज्ञान के लिये प्रार्थना करता हूं। आप मेरी प्रार्थना का साथ देकर तनिक आगे चलिये मैं आप को बताऊंगा कि

कुरान उपरोक्त बातों के सिवाय 'सोशलिज़म' के लिये कैसा पीछे पड़ा है। मुस्ते नमूना अज़ खरवारह (गौनभर में से एक मुट्ठी बानगी लेकर देखने से अच्छा बुरा विदित होजाया करता है) देखिये॥

सी० १५ सु० इस्राईल आ० ४५-४६

(६४) कुरान की शिक्षा है कि मुशरिक और काफिर अपवित्र हैं उनसे मित्रता मत करो। यदि कोई उनसे मित्रता करेगा तो वह भी क़ाफिर होजावेगा और इस कारण खुदा की अप्रसन्नता का भागी होगा। काफिर के अर्थ ऊपर बता चुका हूं। शोक है! कि ऐसे बुद्धिमान् और ज्ञानवान् पुरुषों को अशुद्ध समझा जावे। और जंगल के खानेबदोश असभ्य और कुशील मनुष्य जो बुद्धि और ज्ञान से उल्लू की भांति रहित होकर प्रत्येक गप्प को ईश्वर की ओर से कही हुई अंगीकार करलें उनको अत्यन्त शुद्ध माना जावे। कुरान की इस शिक्षा के अनुसार सब ईसाई, बौद्ध, आर्य, सिक्ख आदि जिनमें से प्रथम तसलीस (पिता, पुत्र, और पवित्रात्मा) को मानते हैं। और सारे के सारे ही कुरान को न मानने वाले हैं अशुद्ध ठहरते हैं और दोज़खी बनते हैं। केवल थोड़े करोड़ कुरानी ही बहिस्त के ठेकेदार हुये। यद्यपि ईसाई वा आर्य आदि ऐसे बहिश्त के भूखे नहीं हैं। परन्तु कुरान की यह शिक्षा क्या कभी प्राणिमात्र में भ्रातृभाव का प्रचार कर सक्ती है? कदापि नहीं। किसीने सच कहा है कि मुसलमान का हाथ प्रत्येक मनुष्य के विरुद्ध और प्रत्येक मनुष्य का हाथ मुसलमान के विरुद्ध रहेगा। मैं इस भ्रातृभाव फैलाने की शिक्षा की जड़ काटने वाले सिद्धान्त को किसी प्रकार ईश्वर की ओर से नहीं मान सक्ता।

सी० १० सु० तोबाः आ० ६१

(६५) कुरान की शिक्षा है कि काफिरों को जहां पाओ मार डालो क्योंकि क़तल से कुफ्र बड़ा है। शोक है! इस

प्रकार की शिक्षा, शान्ति और चैन को कितनी हानिकारक है। इसी शिक्षा ने तो महमूद गज़नवी को अमीनुल मिल्लत बनाया।

सी० २२ सू० अरबराब आ० ६१.

(६६) कुरान की शिक्षा है कि लूट का धन खुदा और उसके रसूल का भाग है और खुदा को लूट के धन का पञ्चम भाग मिलना उचित है। भला जब खुदा ही लूट मार करने के लिये आज्ञा भेजे तो फिर महमूद का क्या दोष? पर हे भाइयो! मैं इस शिक्षा को बड़ी भयानक और नष्ट करने हारी समझता हूँ। ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को इससे बचावे।

सी० ६ सू० अनफाल आ० १-२

(६७) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमानी मत खुदा की ओर से है। मैं इस प्रकार तो इसलाम और कुरान को ईश्वर की ओर से अङ्गीकार करता हूं कि जिस प्रकार सब बुराइयां कुरानी खुदा की ओर से हैं वही उनका कर्त्तव्य है। सब कुमार्ग में चलाना कुरानी खुदा की ओर से है वह ही कुमार्ग में चलनेवाला है। सब पदार्थों का यहां तक कि शैतान का भी वही रचैता है अर्थात् शैतान भी ईश्वर की ओर से है। इस प्रकार मुसलमानी मत भी निःसन्देह खुदा की ओर से है परन्तु उपरोक्त शिक्षा को देखकर मैं इसलाम को सच्चा धर्म नहीं कह सकता। यदि मैं ऐसा कहूं तो सत्य न्याय यथार्थ के गले पर छुरी फेरूंगा, और उपरोक्त बातों के अतिरिक्त मैं निम्नलिखित बातों को जो स्त्रियों के साथ अन्याय के वर्त्ताव के विषय में हैं, छिपाऊँगा, जो मैं कदापि नहीं कर सकता। महाशय गण! इस अन्याय को भी प्रकट करें और देखिये।

सी० ३ सू० उमरान् आ० १६

(६८) कुरान की शिक्षा है कि स्त्रियां तुम्हारी खेती हैं जाओ उनके समीप जिस समय और जिस प्रकार चाहो।

खेती किसानों और ज़िमीदारों का धन होती है, स्त्रियों को धन कहागया है, और केवल विशेष भोग की तृप्ति का पदार्थ समझा गया है। पुरुषों के तुल्य इनको कोई अधिकार प्राप्त नहीं है आगे देखिये।

सी० २ सू० बकर आ० २१६

(६६) कुरान की शिक्षा है कि यदि कोई स्त्री दुष्टकर्म करे तो उसको अत्यन्त पीटो और घर में कैद रक्खो यहां तक कि वह मर जावे। शोक! स्त्री दुष्ट कर्म करे तो उसको पति मारे, यदि पति दुष्ट कर्म करे तो उसको स्त्री क्यों न जूती लगाये और घर में यावज्जीवन बन्द रक्खे। यह केवल इस कारण कि स्त्री दासी की भांति धन मानी गई है।

- सी० ४ सू० नसाय आ० १३

(१००) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान लोग स्त्री को तलाक़ देसकते हैं। शोक है! स्त्री कुरूपा हो, कन्या जने या बुरी हो तो उस को तलाक़ दे दिया जावे किन्तु यदि पुरुष कुरूप हो, कन्या उत्पन्न करे और बुरा हो तो उस को तलाक़ न दिया जावे। तलाक़ का सिद्धान्त जहां स्वयं भ्रष्ट है वहां अपने फल के अनुसार भी बुरा है। तलाक़ का सिद्धान्त पति व पत्नी में सच्चे प्रेम को उत्पन्न नहीं होने देता। किस लिये कि स्त्री सर्वदा डरती रहती है न जाने उस को किस दोष पर तलाक़ दे दिया जावे। तलाक़ का सिद्धान्त बाज़ारी स्त्रियों की संख्या को बढ़ाने वाला है। तलाक़ का सिद्धान्त स्त्रियों को निर्मोह बनाने वाला है।

सी. २८ स. तलाक आयत १-६

(१०१) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान लोग एकही समय में दो दो, तीन तीन, चार चार, स्त्रियां विवाह सकते हैं। भला फिर स्त्रियां एकही समय में दो २ तीन तीन चार

चार पति क्यों न करें ऐसा होता कि कुरान की बनाने वाली कोई स्त्री होती तो हमदेखते कि स्त्रियां पुरुषोंको तलाक़ देतीं, घर कैद रखतीं, एक साथ चार पति करतीं। वह समय धन्य होगा, जब मुसलमानों की स्त्रियां शिक्षिता होकर दासत्व से मुक्त हो जावेंगी और पुरुषों की भांति सब अधिकार चाहेंगी उस समय उन को कुरान को बन्द करके रखना पड़ेगा वा चार २ पति करने का समय आयेगा।

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

(१०२) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान स्त्रियां परदा करें और चादर से अपने मुख को ढक कर बाहर जावें कि परपुरुष उन को न देख सकें वा वे अन्य पुरुष को न देख सकें। कोई कारण नहीं ज्ञात होता कि मुसलमान पुरुष क्यों न चादरों से मुख छिपाकर बाहर निकला करें कि कोई पर स्त्री उन को न देख सके वा वह किसी परस्त्री को न देख सकें। क्या मुख के छिपाने से पवित्रता स्थिर रह सकती है? जब मन का परदा उठ गया हो। इस के सिवाय मुंह को कपड़े से छिपाकर सोना, चलना, फिरना, स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक है। शोक है कि पुरुष आप तो खुले मुख स्वच्छ वायु सेवन करें और स्त्रियां बैल की भांति मुंह पर चादर और मुंहछींका डालने के लिये विवश की जावें।

सी० २२ सू० अहज़ाब आ० ५९

(१०३) कुरान की शिक्षा है कि मुतबन्ना अर्थात् लेपालक पुत्र की स्त्री तुम्हारे लिये हलाल है। यह बात कितनी आक्षेपयोग्य है। माना कि मुतबन्ना स्वपुत्र नहीं है, पर फिर भी साधारण सोशल मेल मिलाप के अनुसार माने हुवे बेटे की स्त्री से विवाह करना कैसा अश्लील है। इस से यह सिद्ध होता है कि यदि किसी का मन किसी की स्त्री पर मोहित होजावे और वह उस स्त्री को वश में न कर सके तो उस के पति को लोभ देकर कि हम तुम को अपनी सब सं-

म्पत्ति का स्वामी बना देंगे, मुतवन्ना बना ले अर्थात् गोद लेले और फिर सहज जोड़ तोड़ करके स्त्री को उड़ा लिया जावे। यदि स्त्री सहमत न हो और कहे कि मैं तुम्हारी पुत्र वधू हूं। तुम मुझे बिना निकाह और बिना साक्षी के क्यों अपने व्यवहार में लाते हो तो तत्क्षण कुरानी आयत दिखाई जावे, कि देखो तुम मेरे लिये हलाल हो। अर्थात् तुम्हारे साथ विवाह करना दोष नहीं और क़ाजी की साक्षी की आ-वश्यक्ता नहीं खुदा ने स्वयं मेरा तुम्हारा निकाह कर दिया है। अत्यन्त शोक है ! ऐसी शिक्षा पर।

सी० २२ सू० अखराब आ० ३७

(१०४) कुरान की शिक्षा है कि दरिद्रता से मत डरो, निकाह अवश्य करलो। खुदा तुम्हें धनाढ्य कर देगा। संभव है कि एक मनुष्य एक विशेष धनवती स्त्री के साथ विवाह करके धनाढ्य होगया। पर क्या ऐसा भाग्य प्रत्येक मनुष्य का होता है। नहीं फिर खुदा का दरिद्रता की दशा में निकाह की आज्ञा देने का क्या आशय है? यदि धनाढ्य बनने की यह खुदाई विधि है, तब तो अच्छी सरल रीति है। पर मैं मुसलमानों को उपदेश करता हूं कि वे ऐसा न करें जब कि वे स्वयं ही लड़के हों दूसरे लड़के को शिर पर न उठावें॥

सी पारा १८ सूरत नूर आयत ३२

(१०५) कुरान की शिक्षा है कि चचा और मामा आदि समीप के कुटुम्बियों की कन्यायें तुम्हारे लिये हलाल हैं। अर्थात् उन से विवाह करना दोष नहीं। इतने समीप के कुटुम्ब में विवाह करना मैं अश्लील समझता हूं। सहोदर भाई बहिनों की सन्तान एक दूसरे को भाई बहिन कहते फिरें और फिर एक निर्दिष्ट समय आजाने पर वे पति पत्नी बन जावें। अरब निवासी आपस में एक दूसरे कबीले के साथ विरोध रखने के कारण कन्याओं को अपने ही कुटुम्ब में रखते थे और शत्रु के कुटुम्ब में कन्या देना अप-

मान जानते थे । पर भारतवर्ष में जहां अरब के असभ्य मनुष्यों की भांति अल्प मनुष्य संख्या के झोपड़े पृथक् २ न थे परन्तु वह बड़े २ नगरों में जहां नाना कुटुम्ब जाति गोत्र के मनुष्य वास करते रहते हैं, इस नियम का चलाना उचित नहीं है । मैं इसको अश्लील जानता हूं ।

सी० २२ सू० अहज़ाब आ० ५०

(१०६) कुरान की शिक्षा है कि मुसलमान वा कुरानी चार से अधिक विवाह एक साथ नहीं कर सकते पर कोई कारण नहीं जान पड़ता कि जो ऐसा नियम बनावें वह अपने आप को क्यों पृथक् जाने और नौ स्त्रियां करे । मैं इस बात को नहीं मान सकता कि नियम बनाने वाला ही नियम को तोड़े । यदि नियम खुदा की ओर से है तो क्या कारण कि एक मनुष्य पृथक् कर दिया जावे ? इस लिये मैं इस बातको न्यायानुकूल नहीं समझता हूं । केवल इस बात को ही नहीं परन्तु उपरोक्त सब बातों को मैं दोष युक्त जानता हूं । ऐसी ऐसी बातों से ही तो विदित होता है कि कुरान कदापि ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता । केवल ईश्वरीय पुस्तक ही नहीं परन्तु वह एक न्यायशील बुद्धिमान मनुष्य की बनाई भी नहीं समझी जा सकती । प्रथम तो उपरोक्त सब आक्षेप स्वयं इस बात को प्रतीत कर रहे हैं कि कुरान केवल यही नहीं कि ईश्वरीय ज्ञान से पतित है परन्तु वह एक मनुष्य कृत पुस्तक कहलाये जाने के भी योग्य नहीं है । पर तो भी मैं इस बात को और भी स्पष्ट रूप से आप लोगों से निवेदन करना चाहता हूं । निष्पक्ष और शिक्षित महाशय जो सत्य भागी हों, वे इस पर विचार करें ?

सी० ४ सू० नसाय आ० ३

(१०७) कुरान की शिक्षा है कि हे रसूल ! (ईश्वर कहता है) हम तुम को यह गुप्त समाचार सुनाते हैं तू और तेरी जाति इस से अत्यन्त अज्ञात थे । महाशयगण ! इस

वही (ईश्वर की ओर से आज्ञा जो जबराईल द्वारा मुहम्मद साहब को आती थी) से पहले नूह इबराहीम आदि की कहानियों को वर्णन किया गया है, और इनको ईश्वरीय गुप्त समाचार कहा गया है क्या इनको अरब निवासी पहले नहीं जानते थे. बाइबिल के पढ़ने वाले अन्य मनुष्य भी इनको न जानते थे। यह सत्य है, कि कुरान के उत्पन्न होने से पहले इबराहीम, नूह, मूसा आदि की सविस्तर कहानियां बाइबिल में लिखित थीं। फिर उसको गुप्तसमाचार कहना और इलहाम का दम भरना सर्वथा भूल है। न जाने ईश्वर को बाइबिल का संक्षेप बनाने के लिये क्यों जबराईल के भेजने की आवश्यक्ता पड़ी। मैं बाइबिल को कुरान से अधिक प्रमाणित समझता हूं। परन्तु दोनों का ही ईश्वरीय ज्ञान पुस्तक के पद से च्युत समझता हूं।

सी० १२ सू० हूद आ० ४६

(१०८) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने उसको वही द्वारा अपने बन्दे पर उतारा है। पर क्या खुदा और उसका जबराईल केवल मूसा, ईसा, इबराहीम, नूह, लूत आदि बाइबिली नाम ही जानते थे। क्या उनको भारतवर्ष के ऋषि मुनी, पाण्डव, कौरव, रामचन्द्र, और सीता, विक्रमादित्य, गौतम, बुद्ध, कणाद, पातंजलि आदि के नाम नहीं आते थे ! और क्या यह सबके सब ईसा मूसा से कम थे ! फिर वही शरीफ़ और कुरान शरीफ़ में उनका नाम क्यों न आया सिकन्दर को तो जुलकरनैन (जिसका पूर्व से पश्चिम तक राज्य था और जिसने कुरान का कोष और हदीस एकत्र किये) के नाम से स्मरण किया है। पर चन्द्रगुप्त का नाम कहीं न आया। मेरी तो यह सम्मति है कि न खुदा ने वही भेजी न जबराईल आया। रसूल खुदा ने अपनी सौदागरी के दिनों में यात्रा करते हुये श्याम देश आदि के सूबों में जो नाना प्रकार की कहानियां यहूदी लोगों से सुनी सो इनको

स्मरण रहीं और स्वप्न में वे ही दृष्टिगत हुईं। यद्यपि इसमें भी अनेक भूल रह गई हैं, जो बाइबिल के देखने से साफ़ हो सकती थीं। इस कारण मैं इलहामी वा ईश्वरकृत पुस्तक नहीं मान सकता।

सी. १४ सू. नहल आ. १०१-१०२

(१०६) कुरान की शिक्षा है कि अहले किताब (ईश्वरकृत रसूल द्वारा आई हुई पुस्तकों के अनुयायी) ने जो यहूदी और निसारा आदि लोग हैं, इंजील और तौरेत में कुछ अदल बदल कर दिया है। इंजील और तौरेत के अतिरिक्त ज़बूर और अन्य पुस्तकों में नबियों का भी संक्षेप वृत्तान्त कुरान में आया है, पर इसमें वेद शास्त्र जिन्दावस्था आदि पुस्तकों का कहीं नाम नहीं आया। जिससे विदित होता है और संभव है कि यह पुस्तकें कुरान से पीछे बनी हों। यदि पहले होतीं तो इंजील और तौरेत की भांति इनका भी कुरान में वर्णन होता, परन्तु यह कहना ऐसा ही है जैसा कि बाबर बादशाह औरंगजेब के पश्चात् उत्पन्न हुआ, नहीं वेद शास्त्र और जिन्दावस्था की पुस्तकें सहस्त्रों वर्ष कुरान से पहले से थीं। शेष रही यह बात कि कुरान में इनका कहीं वर्णन नहीं, इसका यह कारण है कि जिस बुद्धि से कुरान की उत्पत्ति हुई उस बुद्धि ने कभी वेद का शब्द नहीं सुना था। इस कारण अशक्त है।

सी० २६ सू० फतह आ० २६

(११०) कुरान की यह शिक्षा है कि शपथ मत खाओ। परन्तु खुदा ने वही द्वारा कोहतूर, मक्का, जैतून, घोड़ा, हवाओं आदि की, शपथ खाई थी। क्या कारण कि खुदा ने हिमालय, एल्पस, विन्ध्याचल पर्वतों और भारतवर्ष के आड़ू, आलूओं, सन्तरों और भैंस हाथी आदि की कहीं शपथ नहीं खाई? जिन पदार्थों की अरबी लोग प्रतिष्ठा करते थे और जिन की वह शपथ खाते थे, उनकी तो शपथ खाई

परन्तु जो पदार्थ इनसे बढ़कर उत्तम थे, उनकी शपथ न खाई क्या कारण कि खुदा ने कुरान में किसी विशेष नदी की शपथ न खाई। यदि अरब में नदी नहीं थी तो गंगा यमुना, ब्रह्मपुत्र, वालगा, डेन्यूब, मसूरी, मिसीसिपी एमेज़न जैसी नदी उस समय खुदा को नहीं दीख पड़ती थीं? कहीं तो कुरान में कहा होता। शपथ है मुझे गंगा की, वा शपथ है मुझे मसूरी मिसिसिपी की वा शपथ है मुझे यमुना और वालगा की। पर ऐसी शपथ नहीं है! क्यों? इसका कारण कि जिस बुद्धि के भीतर से कुरानी शपथ निकली उसने गंगा, यमुना, वालगा, डेन्यूब काहे को देखे थे और काहे को मरुभूमि में उसने कोई नदी देखी थी। इस कारण मैं कुरान को केवल एक मनुष्य की बुद्धि की गढ़न्त मानता हूं।

सी० २९ सू० मुरसिलात आ० १-५

(१११) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने अनपढ़ों में अनपढ़ रसूल भेजा। तो क्या पढ़े लिखे विद्वान् लोगों के लिये एक अनपढ़ की बात माननीय हो सकती है। और जिस पुस्तक में यह वर्णन हो कि सूर्य एक दल २ में अस्त होता है, ईसा विना बाप के उत्पन्न होगया, लाठी का सांप बन गया इत्यादि २ हम इस पुस्तक को माननीय समझ सके हैं। कम से कम मैं तो एक यथार्थ मानी मनुष्यरचित पुस्तक भी नहीं कह सकता, जिस प्रकार इस को खुदा की पुस्तक कहूं इस कारण मैं विवश हूं कि कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मानूं।

सी० २८ स० जुमआ आ० २

(११२) कुरान की शिक्षा है कि खुदा ने उसको अरबी भाषा में उतारी, यह इस कारण कि लोग उस को फ़ारसी भाषा में होने पर यह न कहदें कि हम इस को नहीं समझ सकते। भला! क्या खुदा को ज्ञात न था कि अन्य मनुष्य

जो अरबी नहीं जानते वह भी अरबों कीसी ही शंका करेंगे अन्यथा हमको मानना पड़ेगा, कि जिस समय कुरान भेजा गया उस समय जितने मनुष्य संसार में थे उन सब की अरबी भाषा थी, इस कारण उन सब को शिक्षा के लिये खुदा ने आदि में जब कि सब संसार में एक भाषा प्रचलित थी, कुरान भेजा। परन्तु यह बात मानली गई है कि आज से तेरह १३ या १४ सौ वर्ष पहिले अरबी भाषा के साथ २ ग्रीक लैटिन आदि भाषायें प्रचलित थीं, कि जिनका अरबी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इस लिये मैं इस बात को नहीं मान सकता कि ईश्वरीय पुस्तक जो साधारण मनुष्यों के उपदेश के लिये उतरे वह एक ऐसी भाषा में हो कि जिसको सिवाय कुछ जाति और जङ्गली भ्रमणकर्त्ताओं के कोई न समझ सकता हो। अतएव यह आवश्यक है कि खुदा के वाक्य आदि सृष्टि में ऐसी भाषा में हों जो सब भाषाओं की जड़ हो। कुरान इस में नहीं है। इस कारण मैं उस को ईश्वर वाक्य नहीं मानता।

सी० २४ सू० हमतिजदा आ० ४४

(११३) कुरान की शिक्षा है कि खुदा के वाक्य नहीं बदल सक्ते। यदि वाक्यों के अर्थ हम सृष्टि नियम के लें तो हम देखते हैं कि कुरान कैसा सृष्टि नियम विरुद्ध बातों और कपोल कल्पनाओं से भरा हुआ है। यदि वाक्यों के अर्थ केवल बातों या आयतों के लें तो भी हम देखते हैं कि एक आयत को बदल कर दूसरी आयत उतारी गई है। जैसा कि कुरान में इस बात का वर्णन है कि 'हम नहीं मनसूख (अन्यथा) करते, किसी आयत को। पर यह कि 'उतारें इससे और अच्छी आयत, सत्यासत्य के निर्णय करने वाले मनुष्य कितनी हीं कुरानी आज्ञायें ऐसी देख सकते हैं कि जो पहले उचित समझी गईं। फिर निषेध की गईं। मदिरा का पहले निषेध नहीं किया किन्तु बहुत काल के पश्चात् निषेध

किया। इसी प्रकार और कई बातें एक तरह पाईं, पर फिर दूसरी भांति करदी गईं। यथा पहले बैतुल मुक़द्दस फिर काबे की ओर मुंह करके नवाज़ पढ़ना; तो क्या खुदा की आज्ञा कुरान में अटल हुई? कदापि नहीं। फिर मैं किस प्रकार मानलूं कि यह ईश्वर वाक्य है, जिस में एक दिन के पश्चात् ही आज्ञा बदल दी जाती है।

सी० ७ सु० अनफ़ाल आ० ११३

(११४) कुरान की शिक्षा है कि मोहम्मद! लोगों को जो काफ़िर नहीं, कहदे कि वह और उनके पूज्य देवकुरान जैसी पुस्तक बना लायें। यदि वह सच्चे हैं और निश्चय वह नहीं बना सकेंगे। निदान वे दोजख में डाले जायंगे। महाशय गण! क्या किसी पुस्तक के ईश्वर की ओर से होने का यह कोई प्रमाण है कि उसके समान कोई नहीं बनासका! कदापि नहीं। यदि यही बात हो तो सम्भव है कि शेक्सपियर के सब नाटक और मेकाले के लेख जो अपने ढङ्ग में सर्वथा निराले हैं, सब ईश्वर की ओर से ही समझने चाहियें। और इसी प्रकार एक दूध पीते बच्चे की ऊट पटांग बात चीत भी जिस का अनुकरण कोई नहीं कर सका, ईश्वर की ओर से ही होना चाहिये। क्या यदि कोई मनुष्य चील और कौवों की भांति कांय २ वा बन्दर की भांति चिड़ २ अथवा चिड़ियोंकी नाई चूं २ नहीं करसका तो उसके यह अर्थ होंगे कि वानर, कौव्वे और चिड़ियां सब खुदा की बोलियां बोल रहे हैं! कदापि नहीं। इस बातको छोड़ कर यदि यह कहा जावे कि कुरान की उत्तम भाषा की कोई समता नहीं कर सकता तो मैं पूछता हूं कि उत्तम भाषा किस को कहते हैं? क्या यह कि एक ही कहानी को सैकड़ों बार दोहराया जावे और एक ही विषय को बारम्बार लाया जावे और एक ही बातको दूसरी तीसरी बार लिया जावे और मकड़ी का शीर्षक देकर सिंह, भेड़िया इत्यादि का वृत्तान्त

लिख दियां जावे। मधु मक्खी का विषय लिखते समय बाबा आदम आदि की कहानियां सुनादी जावें। यदि वास्तव में उत्तम भाषा के यही लक्षण हैं तो निःसन्देह कुरान अद्वितीय है और इस जैसी न आज तक कोई पुस्तक बनी है और न कोई बुद्धिमान् बना सकेगा! और उत्तम भाषा के इस अर्थ के अनुसार मेकाले, ग्लेडस्टोन पिट जैसे योग्य वक्तृता करने वाले मनुष्य नितान्त मूर्ख और वक्तृता से रहित समझे जा सकते हैं। यदि उत्तम भाषा और सद्वक्तृता कोई और पदार्थ है और वास्तव में वह कुछ और पदार्थ है तो मेरी सम्मति अनुसार तो कुरान का पद सद्वक्ता के सब से नीचे के भाग में रखना चाहिये जिस से कोई मनुष्य उस को पढ़ कर सद्वक्तृता करने वाला होने की चेष्टा न करे। मुझे जान नहीं पड़ता कि खुदा ने क्यों एक ही बात को बारम्बार दोहराने के लिये जबराईल को थकाया। केवल यह कह देना उचित था कि बाबा आदम की कहानी को बीसबार, इबराहिम की कहानी को पन्द्रह बार और बहिस्तके क़िस्से को एक कम अस्सी बार लिख लो, चलो जी छुट्टी हुई। भाई! मेरी बुद्धि इस बात को कदापि अङ्गीकार नहीं करसकती कि कुरान स्वयं रसूल खुदा का अद्वितीय मौजजा तुईश्वरकृत पुस्तक है।

सी० १ सू० बकर आ० २२

(११५) कुरान की शिक्षा है कि हे रसूल! तू लोगों को सुनादे कि यदि कुरान खुदा की ओर से न होता तो उसकी बातों में भेद पाया जाता।

महाशयगण! विचारिये 'कुन्' का दम भरना परन्तु फिर भी छः दिन में पृथवी और आकाश का बनाना, मा और बाप के वीर्य से मनुष्य की उत्पत्ति की शिक्षा, पर आदम को बिना मा बाप के और हज़रत ईसा को बिना बाप के उत्पन्न करना!, ला तबदीला ले कल्मतिल्लाः' (खुदा के

नियम बदल नहीं सकते) का दम भरना, किन्तु फिर भी लाठियों के सांप बनाना और पत्थरों में से ऊंटों का उत्पन्न करना, खुदा का पवित्र होना, किन्तु फिर भी उसका मक्कार फ़रेबी लड़ाका कुमार्ग पर चलाने वाला, विघ्नकर्त्ता होना, आदि बातें कैसी एक दूसरे के विरुद्ध हैं। निदान कुरान एक मनुष्य रचित पुस्तक है। खुदा और वही का नाम बदनाम है। शोक कुरान में भीतर तो वह बारूद भरी हुई है कि जिससे वह उड़ रहा है। सच है यह मिसरा "इस घरको आग लगगई घर के चिराग से."।

सी० ५ सू० नसाय आ० ८२

(११६) कुरान की शिक्षा है कि वह लोगों के लिये उपदेश है। मैं पूछता हूं कि खुदा के वाक्य और वह भी लोगों के उपदेश के लिये, परन्तु उन में मुअम्मों (रहस्यों) और पहेलियों का क्या तात्पर्य ! अब तक बड़े २ भाष्यकार और वक्ता ही नहीं किन्तु रसूल खुदा के असहाब (बन्धु) भी प्रयत्न करचुके हैं, पर कुरान के हरूफ़मुक़त्त्रआका आशय किसी की बुद्धि में नहीं आया। अन्त में सबको कहना पड़ा कि यह एक भेद है जिसको खुदा ही जानता है। भला बताइये उपदेश तो लोगों के लिये, पर भेद किसके लिये ? लिखे मूसा, पढ़े खुदा ! इसके अतिरिक्त कितनी ही आयतें ऐसी हैं कि जब तक आप तफ़सीर (व्याख्या) और हदीस (मुहम्मद के बचन) को लेकर न बैठें टक्करें मारिये पर आशय समझ में नहीं आयेगा ! डण्डे का एक सीत मात्र ! की नाईं देखिये "अलम्ताः कैफ़ा फ़अला रब्बोका बअसहा बिलफ़ल" (सिपारः३० सूरतुलफील) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे खुदा ने हाथी वालों के साथ क्या किया ! इन्नशाने अकहुमल अबतर (सिपारः ३०) तेरी बुजुर्गों की क़सम कि वह मनुष्य दुर्दशा में है। आदि २ सहस्रों आयत हैं। हदीस को अलग रखिये। तफसीर को दूर रख दीजिये और फिर

कोई मनुष्य बताइये कि 'असहावफील और अन्न' क्या भेद है मेरी अनुमति में ऐसी पुस्तक कि जिसके विषय को जानने के लिये मनुष्यकृत पुस्तकों की आवश्यक्ता पड़े, पूर्ण और ईश्वरकृत नहीं होसकती।

सी. ११ ख० यूनुस आ० ५७

बात बढ़ी जाती है इस लिये इसको छोड़कर मैंने उपरोक्त कुछ कारण मुसलमानी मत छोड़ने के विषय में वर्णन कर दिये हैं। शेष यह बात कि वेदोक्त धर्म में मुझे क्या भलाई दीखपड़ी इस के लिये पृथक् व्याख्यान की आवश्यकता है। यहां पर केवल इतना ही कहदना उचित समझता हूं कि वेदोक्त धर्म कुरानी खुदा और शैतान के झगड़े; बाबा आदम और हव्वा (आदम की स्त्री) की कहानी, घिनोने बहिश्त और डरावने दोजख, तोबाह, इस तग़फ़ार शफ़अत, हश्र नश्र, हिसाब किताब, तराजू पलड़ा फ़रिश्ते जिन्न, मांसाहार पशु वध, पत्थरों के चूमने, मकान के चारों ओर घूमने, दिन ही में भूखा रहने रात को नियम विरुद्ध खाने, खुदा की इबादत [पूजा] में टांग हाथ पांव हिलाने उठने बैठने स्त्रियों पर बलात्कार करने मिथ्या बातों को न मानने वाले पर उच्चजीवन व्यतीत करने वालों को काफ़िर कहने, उनसे घृणा करने, लड़ने भिड़ने लूटने खसोटने बन्दी करने खुदा के साथ किसी दूसरे को शरीक करने आदि २ सर्व मिथ्या बातों से रहित है। कदाचित कोई मनुष्य यहां पर पुनरजन्म और नियोग के सिद्धान्त को पेश करदे। मैं पुनरजन्म को को न्याय का मूल और नियोग को व्याभिचार के निर्मूल करने द्वारा समझता हूँ। यदि पुरुष और स्त्री पूर्ण ब्रह्मचर्य के स्टेज के भीतर से होकर अपने आप को नियोग का अधिकारी बनासकें तो संसार में स व्यभिचार अपने घृणित और भयानक परिणाम सहित लोप हो जावे। निःसन्देह नियोग उस समय का स्मारक है जब कि स्त्री को खेती, गुलाम, संपत्ति

समझने के स्थान में अर्धांगी समझा जाता था, और जब स्त्री और पुरुष का परस्पर से सम्बन्ध करना विशेष भोग की तृप्ति के लिये नहीं छूटता था, परन्तु शोक है! मनुष्य जितना विषय भोग का वशीभूत होता गया, स्त्री जाति के अधिकार न्यून होते गये। यहां तक कि आज कल उसकी प्रतिष्ठा बहुधा मनुष्यों में एक गाय, भैंस, भेड़ बकरी के समान रहगई, कि जिसको जब चाहा अपने घर से निकाल बाहर फेंक दिया और दूसरी गाय लेली। ऐसे लोगों के सम्मुख यदि हम विषय भोग की अन्धेरियों से पड़ी हुई मिट्टी के सब पर्त हटाकर स्त्री और पुरुष के परस्पर के सम्बन्ध उस के निमित्त कारण को स्पष्टरूप से वर्णन करके नियोग विषय दिखावें भी तो सब चिल्ला उठेंगे "व्यभिचार! व्यभिचार!! व्यभिचार!!! निःसन्देह वह देश और वह जाति और उस देश और उस जाति के वह पुरुष और वह स्त्रियां जो ब्रह्मचर्य का नाम भी न जानती हों और जिन के लिये वर्षों तक पूर्ण ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी रहकर विद्योपार्जन करते हुये सब विषय भोग छोड़ इन्द्रियों को वश में करना और फिर उस के पश्चात् केवल वंश रक्षा के लिये परस्पर विशेष सम्बन्ध करना असंभव होगया हो, वह यदि नियोग को व्यभिचार कहें तो ठीक है और वे विवश हैं पर मैं इस से यह परिणाम नहीं निकाल सकता कि इस विषय में किसी सोसाइटी की पतित दशा होने के कारण नियोग के सिद्धान्त (पर अमल) का प्रचार नहीं होसक्ता, तो वह सिद्धान्त ही अशुद्ध हुआ नहीं सोसाइटी किसी उच्च वा पवित्र सिद्धान्त को निर्बलता वा मूर्खता के कारण भुला सकती। पर समय आने पर विशेष साधनों के उत्पन्न होजाने से जब वह निर्बलता और मूर्खता दूर होजाती है तो वह सिद्धान्त ऐसेही प्रकाश से दीप्तिमान् होने लग जाता है, जैसा आर्यावर्त्त की लाखों वर्षों से पत्थरों के नीचे छिपी हुई

यथार्थ ईश्वरीय विद्या का सूर्य कि जिसको बालब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने स्वार्थी लोगों के हाथों में बन्द वेदों के भीतर से ऐसी शोभा के साथ प्रकट करदिया कि जिसकी किरणों से आर्यावर्त्त निवासी ही नहीं चौंधिया गये, वरन् सहस्रों मील के अन्तर पर अमेरिका में बैठा हुआ एनड्रो जेक्सन भी चकित होगया। इस कारण जिस प्रकाश से पत्थर २ दीखने लगे और जिस प्रकाश को पाकर सहस्रों मनुष्य मुंह से हड्डियों को गिरा कर क्रूरता से निकल आये, उसी प्रकाश ने नियोग के सिद्धान्त का भी प्रकाश किया, कि जिसके लिये आज कल चारों ओर से कतिपय हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, भाई वह शब्द नियत कर रहे हैं, जो मेरे विचार में आज कल के कुछ निकाह वा विवाह पर घटना उचित है क्योंकि वह पुरुष और वह स्त्री जो पूर्ण ब्रह्मचारी न रहकर इन्द्रियों को दमन नहीं कर सके वे निकाह वा विवाह तो वर्त्तमान प्रथानुसार निःस्संदेह कर सकते हैं, पर नियोग नहीं कर सके, यदि करें तो महान् पाप के भागी होंगे। क्योंकि नियोग वह पवित्र सिद्धान्त है कि जिस के नियमों का पालन करना साधारण मनुष्य का कार्य्य नहीं है।

अन्त में मेरी अन्तःकरण से प्रार्थना है कि पक्षपात और हठधर्मी के पर्दों को चीरकर तहक़ीक़ात (सत्य निर्णय करने का विचार) का स्वभाव सब में उत्पन्न हो जो बुरे सिद्धान्त हैं उनको छोड़ने और जो अत्युत्तम सिद्धान्त हैं, उनको स्वीकार करने की सामर्थ्य मेरे अन्य हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, भाइयों को भी प्राप्त हो। तथास्तु॥

(नोट) इन सूचनाओं के अतिरिक्त जो कि समीक्षाओं के साथ दीगई हैं अन्य भी कितने ही स्थानों में इन विषयों के क़ुरान में वृत्तान्त हैं, जो विस्तार के भय से छोड़ दिये गये हैं।